किशोर ज्योति

हिमाचल की रंग स्थली में रचित कविताएँ

H
811.8
Sh 23 K

H 811.8
Sh 23K

— किशोरी लाल शर्मा
एम० ए०

INDIAN INSTITUTE OF
ADVANCED STUDY
LIBRARY SHIMLA

H 811.8

किशोर ज्योति

... विचारों, भावों पर आधारित सौ ... स्व-रचित संग्रह है ।

Library IIAS, Shimla
H 811.8 Sh 23 K
G1261

प्रथम संस्करण: अगस्त 1986

मुल्य : 11रु. 50 पैसे

Indian Institute of Advanced Study
Acc. No. G-1261
Date 29.4.92
Simla
CATALOGUED

लेखक
किशोरी लाल शर्मा एम० ए०
भाषा अध्यापक, राजकीय उच्च पाठशाला ...
ज़िला मण्डी (हि० प्र०)

सर्वाधिकार सुरक्षित हैं ।

मुद्रक : अजय प्रिन्टर्ज, सरकाघाट, जिला मण्डी (हि० प्र०)

विषय सूची

क्रमांक		पृष्ठ संख्या
1.	बन्दना	3
2.	शहीद तेरी मौत के अमर निशाने	5
3.	ाटी के रंग	6
4.	धरा पर हमारा इक घर	7
5.	रंग में भंग	8
6.	वरसात	9
7.	रात और दिन	10
8.	दाम पर राम	11
9.	मानवता का सन्देश	12
10.	मानव की महानता	13
11.	आन्तक का डण्डा	14
12.	जीबन सफर की राहें	15
13.	मानव का जीवन मानवता	16
14.	हिन्द के गीत गालो	17
15.	सुख की िंद कहाँ	19
16.	राम रस मीठा	21
17.	प्रभात	22
18.	विश्व वन्धुता में जन मन	23
19.	जीवन का सुख कहाँ रे मना	24
20.	नर सन्देश	25
21.	हटा दो पर्दा अज्ञान का	26
22.	सह शिक्षा	27
23.	मधुर मिलन की वेला में	29
24.	मधुशाला	30
25.	वेला मिलन की आई	33
26.	जीवन सुधा रस लूट	35
27.	कलम लिखती खरे बोल	36
28.	चित चोर	38
29.	दो मिलन प्रेम के	39
30	रणबीर	40

31.	मालीं वाग में खड़ा	41
32.	नीर भरीं बदली	42
33.	आईने में	43
34.	एक सन्देश	44
35.	निशानी वीरों की याद रखो	45
36.	भोर का तारा	46
37.	मेरे साजन का देश	47
38.	विवाह बन्धन	48
39.	विहंग राग	49
40.	देश गान	50
41.	गणतन्त्र दिवस	51
42.	शीशे का महल	52
43.	पक्षी क्या कह गया	53
44.	पत्ते का झड़ना	54
45.	आंखों का काजल	55
46.	वीरों की पहचान कर लो	56
47.	बादल	57
48.	नींद	60
49.	नेता की भूख	62
50.	विरह वेदना शान्त	62
51.	मेर स्वप्नों का संसार	63
52.	प्रेम कहाँ	65
53.	विष की मौत में	65
54.	बर्षा ऋतु	66
55.	रात	66
56.	अधिकार	67
57.	प्रेम की ज्वाला	68
58.	भक्ति की ज्वाला	69
59.	फूल की कहानी	72
60.	एक स्वप्न साकार	73
61.	देश चाहता क्या है	74
62.	गौरव गाथा भारत माता	76
63.	विश्व धर्म	77
64.	धरती करे पुकार	79
65.	प्रभात की बेला	81

66. बाग की कलियाँ 82
67. मेरे बाग की हमेली 83
68. मानव धर्म 84
69. प्रभात वेला 86
70. आन्धी 87
71. मिलन में जुदाई खड़ी 88
72. इक सन्देश 90
73. बासन्ति बयार 92
74. मेरे आंगन का अम्बूआ 94
75. बेला सोने की नहीं 96
76. मोड़-मोड़ पर चोर 98
77. मदन के आने की पहचान 101
78. तूँ क्यो सोई थी 102
79. सूरज से पूछो 103
80. चेतना 104
81. जेठ की दोपहरी धूप 105
82. दिल की दलेरियाँ 106
83. विरह जलन 107
84. कली सन्देश 107
85. परीक्षा 108
86. दर्द भरा जीवन मेरा 109
87. धन्य मां भारती 111
88. वीरों की निशानी 112
89. दो बन्दें 113
90. नदिया 114
91. प्रेम का नशा 115
92. रुप की देवी हो तुम 116
93. मुसाफिर 117
94. जुदाई का आनन्द कैसा 118
95. भारत भू गान 120
96. मंहगाई क्यों 122
97. बिजली चमकी क्यों 124
98. भारती कबीले 126
99. नारी 127
100. भारत बन्दना 129

बन्दना

नमन करूं उस देव को
जो जग का कर्ता है ।।

गाते गीत भक्त जन नित
ध्यान मग्न रहते वे नित
सरस ज्ञान योगी जन पाते
पार ब्रह्म परमात्मा में मिल जाते
नमन करूँ उस देव को, जो जगत का कर्ता है ।।

देव उपासक सभी जन तेरे
क्या ज्ञानी अज्ञानी सभी तेरे
परदा जाल तूँ ही है डालता
भक्ति मार्ग से तूँ ही है टालता ।।
नमन करूँ उस देव को, जो जगत का कर्ता है ।।

दया धर्म दान और भक्ति
शक्ति बल बुद्धि दाता हो
कृपा सदा सब जन पर करना
यही तो विधाता तेरा जगत है ।।
नमन करूँ उस देव को, जो जगत का कर्ता है ।।

भर दे भण्डार ज्ञान पुञ्ज का
रहे न कोई जन अज्ञान में
तभी तेरे भक्त बढ़ेंगे जग में
होगा प्रकाश फिर विद्या धन का ।।
नमन करूँ उस देव को, जो जगत का कर्ता है ।।

भेद भाव जातिवाद तूने जन
क्यों छोटे बड़े का अन्तर यह जन
जब विश्व जन उस प्रभु का धन
फिर कृपा क्यों न हो प्रभु, तेरे जन ।।
नमन करूं उस देव को, जो जगत का कर्त्ता है ।।

करना ना अब देरी भगवन्
हम हैं सदा तेरे ही भगवन्
भूलों को राह पर लाना भगवन्
सदा कुमार्ग से हटाना भगवन् ।।
नमन करूँ उस देवको, जो जगत का कर्त्ता है ।।

(5)

शहीद तेरी मौत के अमर निशाने

मर मिटे जो देश प्रेम के दिवाने
पूछ लो इन्हें ये क्यों मर मिटे ।।

जिसे जिन्दगी से खेलना आता है
हर शुभा, शाम में ढलना आता है
गैर को गैर समझे, सत्य पर मिटे
यही तो देश प्रेम का सच्चा नशा है ।।
मर मिटे जो देश के दिवाने, पूछ लो इन्हें ये क्यों मर मिटे ।।

यादें सदा बनी रहेंगी गाथों में
चाँद सूरज जब तक चमकेंगे
मेले यादों के लगेंगे ही यहाँ
माँ वीरों की सन्तानें रहेंगी यहाँ ।
मर मिटे जो देश के दिवाने, पूछ लो इन्हें ये क्यों मर मिटे ।।

है दे रही सन्देश वीरों की कहानियाँ
भर रही जोश हमें वीरों की कुर्बानियाँ
पढ़ लो इतिहास सीख लो मिटना बनाना
है लोहू हम में भी उन वीरों का पुराना ।।
मर मिटे जो देश के दिवाने, पूछ लो इन्हें ये क्यों मर मिटे ।।

गीत गाते रहो तुम नित पुराने
भारत माँ में बसे हैं वीर दिवाने
अटल हमारा धर्म, अटल हमारे परवाने

सच पूछो तो हम हैं वीरों की सन्तानें ।।
मर मिटे जो देश के दिवाने, पूछ लो इन्हें ये क्यों मर मिटे ।।

नहीं जागती मन में व्यथा मान की
नहीं चाहते वे सिर पर कभी ताज भी
मातृ भूमि के लिए केवल जानते मिटना
छोड़ जाते हैं विश्व में गौरव गाथा ।।
मर मिटे जो देश के दिवाने, पूछ लो ये क्यों मर मिटे ।।

दोस्तो यादें सदा ताजी रख छोड़ना हमारी
इक निशानी हमारी याद रखना पुरानी
बनाना और मिट जाना कभी न भूलना
चाहो तो गाथाओं में भरना चिनगारी ।।
मर मिटे जो देश के दिवाने, पूछ लो इन्हें ये क्यों मर मिटे ।।

माटी के रंग

रंगा मानव माटी से तूं
क्यों भटका है माटी से तूं
समझ माटी के ज्ञान को तूं
इस माटी में अब जी ले तूं ।।

इधर धरा पर माटी है
उस धरा पर बसा तूं हैं
खाता धन माटी का ही तूं
माटी ही अन्तिम जायेगा तूं ।।

ओ मानव इस धरा पर है
केवल माटी का ही काज
मत भूलना तूं माटी का राज
यह तन भी तो माटी का घर ।।

ये जीव जगत के सारे प्राणी है
रहते इस माटी के सहारे हैं
फिर देख क्यों भूले माटी
सब की जननी है यह माटी ।।

देश धर्म पर मिटे तो भी माटी
छोटे बड़े के लिये है यह माटी
सभी माटी से खेलते खेल हैं
फिर माटी से क्यों न हो प्रेम ।।

किसान की माटी अन्न देती
कुम्हार की माटी बर्तन देती
मानव की माटी धरा पर रहती
वीर की माटी इतिहास बनाती ।।

मत तुम इसे भूल चलना मानव
माटी ही का यहाँ संसार साथी
इक दिन बना महल ढ़ह जायेगा
सारा माल माटी में मिल जायेगा ।।

सभी की संगी है यह माटी
फिर रंग रूप में रंगीन माटी
देश धर्म सब माहीं के साथी
मत समझो माटी है दूर साथी ।।

धरा पर हमारा इक घर

देश विदेश के नर नारी ।
जागो जागो तुम धर्म ध्वज ।।
आज विश्व बन्धुता जगाओ ।
मन कर्म तन यहीं लगाओ ।।

पुकार भर रही हैं नदियां
ये सागर में संग रहतीं
हम अलग धरा कैसे जानें
इक माटी इक हवा बहती ।।

मानव धर्म एक ही है
जग हमारा एक ही है
हम इक ईश्वर के बन्दे
फिर अलग क्यों ये फंदे ।।

कौन जैन, सिख, बौध इसाई
सभी तो हैं विश्व जन
एक सा है खून हम सब में
फिर क्यों भेद बडा जन में ।।

शासन शासक चाहे हैं अलग
राष्ट्रों में चाहे हैं बंटे हम
पर यह तो है केवल प्रबन्ध
फिर भी हम हैं सब मानव ।।

देख तारे आकाश में हैं
सजावट सारे विश्व की ये हैं
एक चादर पर जड़े ये हैं
यही चादर तो ओढ़ें हम हैं ।।

पुकार भर रहें हैं खग
नीले आकाश एक में हम
यह मेर तेर का क्या रंग
जरा कदम धर कर मिल ।।

विश्व जन तुम हम एक हैं
भेद हम में बहुत कम है
फिर प्रेम जगा दो तुम जग
इस धरा को समझो इक घर ।।

रंग में भंग

ओ देख मन मेरे
दूर नज़र भर देख
कौन चीखें भर रहा
जब सूरज चमक पड़ा ।।

यहां भूखा नंगा कौन
रोता हुआ यह कौन
यह कैसा हुआ विहाग
जब बाजा बजा इस ओर ।।

कौन कहता कि हम आज़ाद
कौन सुनता कि हम अनाथ
गरीबों पर यहाँ अमीरों का राज
कम्जोरों पर यहाँ अड़ा दगा बाज ।।

देख ले आवाज सुन ले
महलों की रौनक देख ल
शहरों की हल चल निराली
देहातों में कहां खुशहाली ।।

गुजरा ज़माना बीत गया
गुलामी का आतंक भी गया
फिर क्यों यह रंग में भंग
अपनों में ही यह भिडंत ।।

ओ धर्म के पुजारी सुन
आजाद भारत के जन सुन
जय भारत माँ की बोल
हम सब जन है समान ।।

दया धर्म की पहचान जन
अपनों को तू पहचान जन
यहां तो सभी जन भारतीय हैं
राष्ट्र प्रम में तू मगन रह जन ।।

बरसात

रज कण बरसे अतिभारी
प्रेम कथा कैसे लिखु पुजारी
मन चंचल रस स्वाद चखे
राम कथा कैसे गाऊँ मैं ।।

घोर घटा गगन है छाई
मृदुल ज्योति नभ में है आई
देख नयन जाल बुन डाला
रस स्वाद राम रस मन भाई ।।

मोर मद मस्त नाच रहे हैं
नद नाले वेग से भरे चले हैं
धरती रुप रंग हरियाली छाई
देख भक्ति राम गुण नर गाई ।।

पानी भर भर नदियाँ बहती
तीर किनारे खरी खरी जाये
देख विधना के ये रंग न्यारे
राम नाम धुन मन मेरा गाये ।।

पथ में पथिक जन घेरे
वर्षा बर्षी तन मन मेरे
देखे माली हंसी हर डाली
राम रस की अनूंठी कहानी ।।

दूर दूर सब जग लागे
पक्षी गण भी हैं कहीं भागे

देख सखी मन ने मनाई
राम कथा है सदा सुख दाई ।।

कीट पतंग गीत रस भूले
धरती अन्दर कहीं मन भूले
लूट लूट रस ओ मतबाले
राम नाम रस तू लूट ।।

रात और दिन

1. दिन में सूरज चमके भाई
अब चाँद तारों की रात नाहीं
रातों रात चमकते ये तारे
सूरज के पथ में घूमते सितारे ।।

2. मानव तुम मानवता अधिकारी
चन्दा सितारों की रात है भाई
अब सूरज की बारी कहाँ भाई
दानवता की अन्धयारी है छाई ।।

3. देश के भषक हित नाशक हैं
प्रेम धर्म के बे घातक अड़े हैं
ज़रा चाँद सितारे बन तुम चमको
दूर अन्ध रात को हटा तुम चमको ।।

4. दीखते काज हैं यहाँ निराले
हर काम में हैं यहां घुटाले
फेर बदल आपाधापी है जारी
समझ लो अब रात है अन्धयारी ।।

5. पूछ लो हर दफ्तर तुम जाई
चुस्ती में सुस्ती है यहाँ भाई
कहीं माल घुटाला कहीं गरमाई
ज़रा हटा दो यह जादू की लुटाई ।।

6. काम दलाऊ प्रोग्राम की किस्तें
चलतीं
काम चलाने में दिकतें ही
दिकतें पड़ती
दश में भेद भाव क्यों हुआ जारी
जब योग्य से योग्य जन हैं
अधिकारी ।।

7. रोग लग चुका है इक भारी
धक्का दे दो काम को तुम भाई
देखें शोषण किस ढंग हम बढ़ वे
देश की तरक्की को चार चाँद
लगा दें ।।

8. ज़रा दोष को दोष समझ लो
अन्ध कूप से दूर तुम मन रख
लो
योग्यता के आधार पर काम
चला लो
देश से बेकारी को दूर हटा
दो

9. अब जाग रे जोगी जाग जा
अन्धकूप में यूँ मन मत रमा
तूँ नित कर्म स्वछन्द निभाता जा
सब को गले तू हरदम लगा ।।

10. दीख रहे हैं नभ में तारे
देखो कितने ये हैं प्यारे प्यारे
चाँद हर रहा है अब अन्धेरा
पर तारे फिर भी है प्यारे-प्यारे
बड़ाई हरता कौन है भाई
चमक तारों में भी है आई
चमको तुम भी खूब चमको,
रात के सितारो तुम खूब
चमको ।।

दाम पर राम

दिल-दिल में दाग
हर बात में बात
जब तब में तब
भेद भेद में भेद ।।

देख लो समझ लो
रट लो चख लो
सच है यह बात
हर बात का दाम ।।

काम-काम हरे नाम
पहले दाम फिर काम
वड़े-वड़े में भेद
सच है यह काम

दीन-हीन दीम दीन
झूठ में मान कौन
देख लो देख लो
कहाँ ज्ञान कहाँ राम ।।

जप तप में भ्रम
राम राम कहाँ राम
झूठ, झूठ है झुठ
जग में जन झूठ ।।

रहते देव हैं रहे देव
दीखते हैं देव ही देव
मान मान में ही मान
पर हरे मान में दाम ।।

जग में जन जगे
मन्दिर में मन जगे
दाम में कहाँ राम
हरे राम का नाम ।।

सच तप ज्ञान जगे
जोग में योग जगे
धर्म में राम जगे
कर्म में जन जगे ।।

सब में ही प्रेम प्रेम
नित दीन हीन में राम
भक्ति में अब कहाँ राम
अब तो शक्ति का है काम ।।

मानवता का सन्देश

राज काज में दक्ष हो
निज काम में प्रवीण हो
नित धर्म की व्यथा जगे
हर बात में सजा हो ।।

सदा रस में यज्ञ कमाओ
रसिक वन गुण गान करो
नित-निज कर्म सही करो
मानवता का स्वर जगाओ ।।

है बज रही बांसुरी ज्ञान की
वचन, कर्म धन फल पाओ
है मित्रता का गौरव मान
यही विधना का रुप गान ।।

देख रहे चांद तारे सूरज
नित गाते खग मीठा राग
धरती पर खिला बसन्त राज
देखा निराला बिधि राज ।।

कहां गरमी सर्दी, बर्षा सदा
कहां बसन्त बना रहता सदा
इक दिन बदलेगी ये बहार
फिर तुम कहां हम होंगे सदा ।।

नयनों में यहां चका चौंध
कानों में स्वर मीठे-मीठे
दर्द भरी बेला भी तो साथ
कर्म पथ रहे सदा ही साथ ।।

गरज भरता मेध बिजली चमके
कह रहा है पुकारे सुनो सन्देश
धरती पर रहने वालो मत डरो
यहाँ धरा पर विधाता है खड़ा ।।

आये हो यहाँ जन्म लेकर
पथ अपना न भूल जाना
निज धर्म पर रहते रहो
मानव को मानव समझते रहना ।।

मानव की महानता

दूर नज़र से हटते क्यों
मानवता का शृंगार करो ।।
अब बेला सोने की नहीं
ज़रा इज्जत से काम करो ।
बाल बाल बचे हों
ज़रा जोर ज़बर करो
आख़िर सफ़र लम्बा है
देर अब मत करो ।।

देखते ही देखते नवीनता
जागते ही जागते प्रवीणता
अब मत रुकना ओ महानता
पाओं तले है तेरी दीनता ।।
इक और जगी है मित्रता
साफ ही तो खड़ी दीखती
अपना भरोसा अब क्या है
आये आज हैं चलना कल है ।।

रातें लम्बी इन्तजार की हैं
चलते चलो आतें काम की हैं
इक दिन प्रभात होगी ही
कालिमा दूर भी तो होगी ही ॥

शेष अब करना ही क्या है
भरोसा किस का यहां रहा है

सभी ही तो अपने पथ पर हैं
पथ से विचलना भी कुकर्म है ।

सोच लो समझ लो देख लो
यहां धरा पर ही धरा है
तुम चमको सब को चमका दो
यही मानव तेरी महानता है ॥

आन्तक का डण्डा

हटा दो परदा जरा गौर से देखो
पहचान अपनी ज़रा करके देखो
आये पुजारी बन कर थे हम सब
पर देव को हम यहाँ भूल चले ॥

ये रंग बिरंगे साज हैं यहां सजे
आदमी ही आदमी पर चलाये डण्डे
दूर नज़र भर देख कर चलना
बन्दे से बन्दगी होगी यहां कहां ॥

देखो सामने भरा पड़ा है जहर का घड़ा
उठाकर देखो भार कितना इसका बड़ा
मानव से मानव का भेद है यहां पड़ा
दु:ख शोक में ही नतीजा आ घिरा ॥

गरीब क्या अमीर सभी पर डंका वजा
डोल उठे राज भवन आन्तक का नाम पाया
हाये-हाये बचाओ-वचाओ की गूंज उठी
रेल, मोटर में क्यों ही यह आग लगी ।।

देखे ही देखे कोई मार डाला
देखो सुहागिन का सुहाग छीना
बच्चे रोये बताओ तात कहां
कह दो यह हाल बेहाल क्यों कर डाला ।।

धर्म के पुजारी अधर्म यह क्यों
सुख के मानी कुकर्म यह क्यों
देख देख पहचान कर देख
मैं भी तो हूं इन्सान के भेष ।।

क्या पत्रकार क्या नेता
सब में कौन है विजेता
सब रौंद डाले ओ आंत की
देख देख यह भेद क्यों ऐसा ।।

जीवन सफर की राहें

जब बाला था तो क्या भाषा
जीवन सफर की राहों में
एक दिवस मम यूं कह बोला

माँ मैं पढ़ लिख अकसर दूगाँ
चारों तरफ मेरे कागज होंगे
मोटर गाड़ी में सफर नित होगा ।।

जब मैं पढ़ लिख बड़ा हुआ
कुछ काम काज में नित भटका
आया दिन दफतर बाबू बन धमका
माँ अब लो मैं घर भर दूंगा ।।

बीते दिन ब्याह रचना रची
घर इक दुलहन भी आ धमकी
अब मैं इक अफसर ही था बना
माँ अब छोड़ यह घर का धन्धा ।।

बच्चे दो ही होते घर में अच्छे
परिवार नियोजन भी तो पूरा हुआ
देख लिखाई पढ़ाई बालों की चलाई
अब हुई माँ मेरी नौकरी की
विदाई ।।

जैसे बालक से हम बूढ़े हुये
समझो जीवन के उद्देश्य पूरे हुये
संसार में घर बसाना जीवन रहा
हम तो ठगे गये यह जीवन नहीं ।।

जीवन सफर की राहें तो और
जीवन जीते वीर पुरुष यहां
जीवन जीते साहित्यकार यहां
जीवन जीते राम भक्त यहां ।।

सच कहो माँ सच्चा जीवन कहाँ
हम तो जीते अपने विरद में माँ
विश्व को क्या दे पाये माँ
ऐसा जीवन दे दो जाने विश्व हमें
माँ ।।

मानव का जीवन मानवता

ओ जायें तो जायें कहां
दर्द भरा जीवन है यहां
आया था मानव बन यहां
पर पाई दानवता ही यहां ।।

बचा क्या अब है यहां
नंगे थे आये हम सब यहां
पर नंगे ही चले गये कहां
देखा जीवन का रंग यहां ।।

भूख प्यास से तन बचाया यहां
मानवता से मुख मोड़ा यहां
साज बाज से धम जोडा यहां
पर किस काज यह जीवन यहां ।।

पराये बने रहे जीवन भर यहां
अपना कौन बना जीवन भर यहां
देख हार चले हम जीवन यहां
सच पूछो तो व्यर्थ गवाया जीवन
यहां ।।

जीते वे लोग सच्चा जीवन यहां
जो मरते हैं पर काज हित यहां
जीवन सफल हुआ उसका यहां
जो अमर हुये कर काज यहां ।।

पीड़ पराई जो जान गये यहां
व्यर्थ जीवन हुआ न उनका यहां

देश, धर्म जाति पर लगा जव
जीवन यहाँ
सत्य पूछो तो सच्चा जीवन यहीं
यहाँ ।।

सफल जीवन में जीना किसे यहाँ
मानव को मानव समझे नर यहां
मान, पान, सुख त्यागे जो जन
यहां
परमार्थ के लिए संकट झले जो
यहां ।।

भक्त जन जीते सच्चा जीवन यहां
वीर पुरुष कहलाते ये जन यहां
ज्ञान, उपदेश, आदर्श छोड़ते जो
यहां
वही नर मानव कहलाते रहे यहां ।।

हिन्द के गीत गा लो

उठो खड़े हो जाओ
हिन्द वालो हिन्द बचालो
इधर घर के भेदी अड़े हैं
उधर दुश्मन पास खड़े हैं ।।

देखो समझो ये कौन हैं
खतरे में हम सब भारती हैं
टुकड़ों पर दुश्मन के जो पले
गैरों के संग जो हैं आज खड़े ।।

खबरदार इन पहरेदारों से रहना
पहने खाल मृगराज की हैं खड़े
पहचान इनकी आवाज से करना
गीदड़ों की पहचान जरा तुम करना

देखी दलेरी इन्ह वीरों की आज
वार इन्ह का निहथी नारी पर आज
फिर चाकर दारी भी दिखावें भी
साथ
बच कर रहना इन कायरों से
आज ।।

धर्म इक हमारा देश धर्म
जाति हमारी इक मानव धन
परमात्मा हमारा इक, इक जन्म
स्थल
फिर यह क्यों धर्म कुकर्म ।।

पूछो जरा हिन्द वालो पूछो
कौन जहर डोल रहा, पूछो
गीत हीर रांझा के तुम छोड़ो
गीत वीरों के तुम आज गा लो ।।

यह हिन्दोस्तान एक देश
यहां वीरों का खून खौलेगा
देश बिद्रोही यहां कहां बोलेगा
जब सारा जन मन डोलेगा ।।

तुम्हें देख सुन चलना भेदी
कहीं तेरी हो न जाये तपाही
जो एकता में संकीर्णता लायेगा
वह कभी भी यहां बच न पायेगा ।।

यह वीरों की धरती भारत है
यहां गीत गाते सभी भारती हैं
जब डंका बजने लगता है
तो सभी नाद में मस्त लड़ते हैं ।।

हिन्द पर नज़र रखने वालो
यह मत समझो यहां गीदड रहते हैं
अभी याद रखना यहां शेर जीते हैं
जो मरना मिटना सदा भी तो
सीखे हैं ।।

हिन्द वीरों की बस्ती बनी हैं
यहां युद्ध वीर, धर्मवीर सभी हैं
पर गीत भारत मां के मिल गाते
हैं
तभी तो हम सब कहलाते भारती
हैं ।।

प्रान्तों, धर्मों और पहनावों में
भिन्नता
पर मित्रता में भी है सबल एकता

जयहिन्द हमारा नारा सदा ही
रहेगा
रल मिल सब हिन्द के गीत गा
लो ।।

मन्दिर मसजिद गुरद्वारे हैं हमारे
गुरु नानक राम, कृष्ण हैं हमें प्यारे
हमारी भारत भूमि तीर्थ राज भू का
फिर देश धर्म, भारत जन
हमारा ।।

सुख की नींद कहाँ

राम राम यह क्या हुआ
भटके नित नये रंग में हम
चकाचौंध में रंग गये हम
थोड़ा जीवन सुख भी तो कम ।।

चार तरफ है घना अन्धकार
फिर व्यस्त नित हम सब
देखा मधु स्वप्ना हर दम
ओ कोस ले मानव निज मन ।।

कभी सोते थे धरा पर हम
बिछौना भी तो था कम कम
नींद भर बिताते थे दुख गम
आये राम अब क्यों भूले हम ।।

मिली खटिया फिर बिछौना
साथी संग संग थे तब हम
रातें कटती थोड़े थे तब गम
राम राम बीते वे भी दिन ।।

कुछ पाया धन मान भारी
खोटी कमाई भी हुई जारी
पलंग गलीचे सजे साज
पर अब कहां नींद प्यारी ।।

चलो चली राम-राम जारी
भूल गई संगनी भी प्यारी
अब रह गया इक काम भारी
रख लो धन माल घर भारी ।।

मिला महल नेता गिरी जारी
दौड़ें लगती दिन रात भागी
नींद भगी रातें जागे बीती
अब तो सोने को गुद में जारी ।।

राम राम यह कैसी सुखदारी
सजे महल बाहर लगी पहरेदारी
पर नींद कहां चली गई बेचारी
रोग लगा, भयानक थी बीमारी

कोस लो, ओ देख लो पुजारी
रंग में यह भंग क्यों जारी
जहां सुख ढूंढ़ते रहे भारी
वहां मिली कहां नींद प्यारी ।।

जिसे कहते तुम उन्नति हो
क्या वही अवनति नहीं है
जहाँ ढूँढते सुख ही सुख हो
वहाँ तुम्हें मिलतादुख नहीं ।।

सरस जीवन इक सरस है
मत भटको मोह जाल में तुम
क्या पाया मान पान सब में
सब सुख गवाया इस जाल में ।।

देख लो हर जगह देख लो
फूल खिलते ही मुरझा गया
पला वह उस डाल पर था
उसी डाल पर वह मुरझा गया ।।

क्यों उस फेर बदल में पड़ हो
सदा सादा जीवन जी चलो
मिल जितना वहीं सन्तोष हो
फिर नींद भर तुम सो लो ।।

जो बदलता ढंग अपने निराले-2
जो हमें झोंपड़ी से पहुचे महल दुआले
जो देखता स्वप्न नित बड़े निराले
जो जितना चाहता सुख तगड़े तगड़े ।।

कहाँ मिलता है सोना उसे भले
कहां नींद आती महल दुआले
नींद बिना स्वप्न कहाँ आते भले
हरजीत के पीछे पड़ते हैं लाले ।।

ओ उठ जा मानव तूं जाग-जाग
क्यों कोसता है तूं सुख की बात
सदा यह संसार दिखता भ्रम जाल
तूं भज ले नित हरि नाम ।।

सादगी में जीवन सुख मिलेगा
सादगी ही में परिवर्तन जगेगा
जरा सन्तों फकीरों को पहिचान लो
सच्चा सुख भर नींद में मिलेगा ।।

राम रस मीठा

राम का जाप करो मन में भाई ।
व्यथा रोग तन मिट जायेगा ।।
राम कथा श्रवण करते ही रहो ।
नित ध्यान मगन तुम बने रहो ।।

पीड़ा रोग सब नाशे राम प्रकाशे ।
ज्यूं अन्धकार में दीप प्रकाशे ।।
हीरा धन अनमोल रत्न है ।
राम धन से वह थोडा है ।।

जग में जन जो नित राम रटे ।
जग में जन्म वही सूचा रखे ।।
देर काहे को करे जन भारी ।
अब तो वेला राम नाम की ।।

सब रस फीके राम रस मीठा ।
जाने जो जन राम रटन तरीका ।।
भेद भ्रमसे दूर जन रहे जो ।
राम नाम का भेदी हो जन जो ।

मीन मेख क्या दाग राम में ।
भक्ति ज्ञान जोग बल राम में ।।
साज बाज रंग सुगन्ध राम में ।
निर्मल जल हो ज्यूं तडाग में ।।

भेष सजा ज्यूं योगी राम का ।
समझो तभी राम अपने समाज में ।
देखते क्या हो राम है पास में ।
हास विलास क्या है ज्ञान में ।।
रण में भंग तलवार में जंग ।
राम रस बिना मानस तंग ।।

तुम देख लो पहचान लो ।
राम रस का पान कर लो ।।
धीरज धर्म अरमान है राम में ।
तुम दीपक जलाओ हरि नाम में ।।

Acc. No. 7826
Date 29.6.92

प्रभात

राग रंग रति रेणु सम
रात रण रच रहा संग
रसिक रास रच रहा सुर
रे रज रम रही सरस ।।

शीतल मन्द हवा डोले
मन मस्त भ्रमर बोले
सखी संग सखी डोले
प्रेमी देखे यूं मन बोले ।।

समता जगती में छाई
खेल यह पूरी भाई
खग स्वर गूंजे छाई
देख प्रेम मिलन भाई ।।

लालिया धरा पर छाई
जगती जागी देख भाई
कलियां थी वह फूलीं
देखो भौरे मस्त भाई ।।

रूप निराला दीख रहा
अरूण ज्योति दिख रही
अब मिलन बेला नहीं रही
पर दानवता कहाँ गई ।।

हर उजाले में नवीनता
हर प्रातः में रसीलता
हर रात में दानवता
हर मिलन में समानता ।।

रीत पुरानी प्रीत पुरानी है भाई
विधना की यह अमर कहानी भाई
रसिक गण सब पाते प्रीत यहाँ
पर दानवता में मानवता नहीं
भाई ।।

विश्व बन्धुता में जन मन

मत झूमो तुम नभ में
यहाँ धरा पर जग है
मानव ही यहाँ दानव है
वस यही इक भय है ।।

रखा तम में जन मन
जन जन में हर दम
भरा जहर का धट जन
यही तो जन का मर्म ।।

मत भूलो मनोबल तुम
जन का दिव्य रुप हो तुम
धरती का भार सार तुम
बिन्ध बाधा हरो जन तुम ।।

धीर वीर जन तुम
जय के प्रतीक हो तुम
प्रेम उजागर के सागर
देश बिदेश में हो मानव ।।

रहे तेरा धर्म अटल जन
जगते रहें सभी विश्व जन
अन्ध कूप से हट दुर्जन
यही है अटल विश्व धर्म
गीत सँगीत में पुकारे ज़न
हर शब्द में रट ले प्रेम जन
जीव को जीव समझले जन
हिंसा से दूर हट रे तूँ जन ।।

कौन मित्र कौन दुश्मन
हम सब का परमात्मा इक
फिर बैर विरोध हो जन
यह कैसा तेरा मानव धर्म ।।
दिव्य ज्ञान दीपक ले जला
जान विश्व को तूँ अपना घर
यही मानव तेरा सच्चा धर्म
यही है भक्ति का मार्ग दर्शन ।।

जीवन का सुख कहाँ रे मना

रात भर का तम न टला
जन मन का भ्रम है बना
रे जाग न अभि मेरे मना
अन्धकार अभि घना है बना ॥

प्रेमी मिलन कहाँ है जना
तूँ प्रभात का फूल ही बना
भौरा रस लूट लेगा मना
तूँ हंस ले देख ले सूरज मना ॥

कलियां खिल जायेंगी सव
जव तूँ झड़ जायेगा मेरे मना
याद कहाँ कर पाऊँगा मेरे मना
यह जीवन अन्धकार में है बना ॥

फिर उजाला तेरे तम में बना
हर वस्तु में किरण जाल बुना
हद नहीं तेरे तम की मना
जरा सोच समझ कर चल जना ॥

देखते देखते जीवन बना
तम से तम का संग घना
उजाला तो तम पर ही जमा
फिर कहां तेरा मिलन मना ॥

लूटने वाले लूट मचाते धनी
प्रीत में मीत जमाते धनी
रस के रसिये अब मिट चले
जीवन में जीना है दो घड़ी ॥

नर सन्देश

रख ले मान तू
सोच ले घने अरमान तू
घिर चुका माया जाल में तू
समझ ले गौरव गाथा गान तू ।।

हिंसक वना तू
मार धाड़ मचाले तू
गैरों को यार बनना ले तू
सिर ताज लगा कर चल ले तू ।।

दुख में सुख
हर चाल मान दान
सर्वत्र दु:ख में सुख ढूँढता
अपनों से बिगाड़ करता चला ।।

मित्रता में सुख
मित्र बने पर कहाँ गये
कुछ दाम पर ही तो बने
दगा देकर वे वहाँ से चले ।।

धर्म कर ले तूँ
जव मान नाम पास है
मित्रता पर तो अरमान है
देख ले ढ़ंग धर्म के धड़े है ।।

खोज ले भगवान तूँ
यहाँ तो दाम पर राम मिले
हर शांम यहां दो प्रेमी मिले
आत्मा परमात्मा के मिलन भले ।।

जग में जी ले तूँ
इक रट लगा कर देख तूँ
यहाँ अपने ही घर पर डट तूँ
सब को प्रेमी वना ले तूँ ।।

हटा दो पर्दा अज्ञान का

जन्म जन्म के फेर बदल
हर कदम में इक हलचल
रहे तेरा बना यह तेज तम
तुं ही है वसा हर चमन ।।

कलियों, डालों फूलों में रमण
नदियों सागरों में तेरा चलना
तूँ हर डाल पाता में झूमें
चलना चलाना देखा तेरा गजब ।।

रहे चाल ढाल में तूँ मगन
रहे गर्मी सर्दी में इक नजर
तूँ खिलवाता खिलवाड़ निराले
ओ समझ ले मैं तेरे हवाले

रख दे धरा पर कदम को
चल पड़ यहाँ घर कदम को
मैं चूमता रहूं तेरे चरण को
तूँ मुझे मिला अपने चमन में ।।

यहाँ धरती भार सहती रही सदा
बहाती रही आँसुओं की बरसात भी
तुम जगाते रहे अपने तेज प्रकाश को
हम मिटते रहे तेरे हर तुफान में ।।

कहो अब बचा क्या है जहान में
इक तेरा सहारा ही है जहान में
तुम मिलन आतमा का करा दो
इस मिलन में परमात्मा दिखा दो ।।

रहे धरा और आकाश सदा
हमें मिटना मिटाना सिखा दो
हटा दो पर्दा मोह जाल का
हमें दिखा तो मार्ग ज्ञान का ।।

सह शिक्षा

नारी रंगत हर समाज की
नारी शोभा गृहस्थ जीवन की
नारी धर्म, मान की मूरत रुपा
मत भूलो नारी के दिव्य रुपा ।।

मंगल मय जीवन संग संग बीते
नारी बिन घर सूना दीखे
ओ मत भूलो नारी नर की प्रीतें
है जीवन के सरस यही तौर
तरीके ।।

फिर बाल, बाल में फासला क्या
हर लड़के लड़कियों में यह भेद
क्या
माता पिता, गुरु सभी से एक
नाता
हैं फिर क्यों पढ़ना पढ़ाना अलग
सा ।।

शिक्षा में सहशिक्षा सस्ती शिक्षा
बालक बालिका सभी को शिक्षा
देश बिदेश की नई यह शिक्षा
स्वतन्त्र देश में नारी पाये सम
शिक्षा ।।

दूर-2 रहे क्यों बाल, बालायें
दोनों जीवन जीयेंगे साथ साथ
हर काम में रहेंगे ये साथ साथ
कन्धे से कन्धा मिला चलेंगे साथ ।।

कर लो चर्चा देख लो कमाल
नारी कहाँ नहीं नहीं दिखाती
कमाल
खेल का मैदान, नौकरी का हो
स्थान
राजनीति में भी कहाँ है नारी
हारी ।।

शिक्षा नारी का जन्म सिद्ध अधि-
कार
वह पीछे रहे तो पीछे रहे समाज
पढ़ लो लिख लो नारी के साथ
पवित्र जीवन बनें जब हो नारी
साथ ।।

ज्ञान प्रकाश जब नर नारी पाती
लज्जा शर्म फिर कहाँ रह पाती
दूर-दूर रह होते अपने पराये
फिर नर नारी की यह दूरी
क्या ।।

हकों की लड़ाई लड़ेगी आज नारी
मर्दों की खिलौना न रहेगी नारी
वह मान धर्म सब जान गई है
वह अपनों को खूब पहचान गई
है ।।

अशिक्षा के अन्धकार में गोते
खाती थी
पराये हाथ वह तब बिक जाती
थी
गुलामी में पलती दुख झेलती थी
घर की चार दिवारी ही में रह
पाती थी ।।

ज्ञान दीप नारी ने जब जगा लिया
वह जीना और बनाना जान गई
अपनों परायओं का अन्तर पहचान
गई
स्वच्छ जीवन स्वच्छ घर वसाना
जान गई ।।

सह शिक्षा से भ्रष्ट नही होते
नर नारी
ज्ञान प्राप्त करके उदार बनते नर
नारी
अधूरे ज्ञान से ही होती सदा दुत-
कारी
ज्ञानवान सदा कदम धरत हैं
उपकारी ।।

सह शिक्षा विश्व बन्धुता की
पुजरी
सह शिक्षा है जीवन मरन की
निशानी
देख लो समझ लो हानि लाभ
ज्ञानी
यहाँ नहीं इस से होगी कोई
बदनामी ।।

देख लो सुन लो नर नारी के संग
पहचान लो मर्द औरत के रंग
भेद दोनों में है बहुत ही कम
फिर शिक्षा क्यों न हो संग संग

मधुर मिलन की बेला में

तुम कामनी झरने में देखो
क्या रंग नजारा नजर है आता
इधर आवाजें भर कर देखो
गाओ गीत झरने से मिलके ।।

रोते रहें चाहे दिवाने तेरें
पर हंसते रहेंगे ये झरने प्रिये
तुम मधुशाला में बैठे क्या जानो
देखो क्या गाते हैं ये झरने ।।

तुम मौन मग्न नित रहती हो
निज वन की होश गंवाति हो
हंसो खिलो तुम इस चमन में
क्या रखा है इस दमन में ।।

रेल रहे हैं झाग में झरने
हंस रही है नदिया मन में
किनारें से हम देख रहे हैं
दो मिलन के यहाँ बसेरे ।।

रुठो न तुम अब देर इतनी
कहीं झरने की झर-झर रुक न
जाये

प्यार की बेला में तुम उठो
राग रागनियों के स्वर जरा सीख
लो ।।

ये पहाड़ी नद्रियों के झरने प्यारें-
प्यारे
देखो यहाँ स्वर्ग के हैं नजारे ही
नजारें
मौन क्यों खड़ी हो कुदरत देखो
मिलन का स्वप्न साकार तुम बना
लो ।।

मधुर गीत गा रही यह नदिया
तुम मंगल मिलन बन यहाँ जागो ।

तेरी मिलन बेला में हम आयें
तुम गा लो हंस लो मधुर गीत
झूम रहे हैं डाल पात सभी है
तुम भी झूमो इस ठाट-वाट में ।।

देखो कोयल कूक रही है डाल-
पात में
जहाँ नदियां गाती झरने झर-2
जाते

तुम हंसों खेलो, हम नाचे गायें ओ
मधुर मिलन की बेला में मस्त हो
जायें ।।

देखो यह डाली क्यों डोल रही
मस्त हवा इसे क्यों झक झोर रही
वसन्त राज का जादू गज़ब देखा
कुदरत भी तो यहाँ नाच रही ।।

आस पास हरयाली और महक
खड़ी
फूलों की डाली मस्त भौरे अड़े
तेरे रुप के मस्ताने हैं हम भी तो
खड़े
क्या स्वर्ग यहीं बसा मस्ती भरा ।।

इधर पास आकर तूँ देख ज़रा
फूले गुलाब क्यों यहाँ झड़ पड़ा
कलियाँ तो अब जागेंगी होगी
बहार
जीवन सफर की कलियाँ फूल
बनतीं देखीं ।।

तुम उठो अब देरी है क्या
मस्ती भरा मौसम है इस ओर
तुम नाचो हम गायेंगे बहार
सुहाग तेरा अटलर हे इस दर-
बार ।।

धरती रंग में रंगी मस्त है
धरा पर धरा साज बाज
अब तो बेला जाग्रण की है पास
यही मिलन की व्यथा पुरानी है ।।

मधुशाला

ओ बाले मधुशाला ज़ा देख
प्रीतम बैठे उदास-उदास
हुआ यह मौसम है आज उदास
क्यों रचा तूंने उपहास ।।

प्रेम मिलन की यह घड़ी सजी
प्रीत मइन्तज़ार में यूँ ही बैठा
बोल सखी यह इन्तजार मीठा
प्रेम का मज़ा इन्तज़ार में सजा ।।

मधुशाला का रंग कितना मीठा
जहां प्रेम के मिलन में प्रेमी रुक
मिलन पर तो यह मधुशाला होगी
सुनी
तभी मिलन की घड़ियाँ हैं लम्बी
बनी ।।

ओ बाले देर क्यों अब आ
मधुशाला में रंग साज सजा
इन्तजार में मजा क्या भाग जगा
प्याले भरें पड़े है आ प्यास
बुझा ।।

ओ प्रात के मीत मुझे मत बुला
उदास मौसम उदासी छा गई
आज चाँद भी बादल में जा छुपा
तूँ ही मधुशाला को सजायें सजा ।।
ओ बाले इस जुदाई में क्या मजा

जरा मेरे आसव में आ जा
यहाँ प्याले भरे पड़े रखे हैं
आज जुदाई में यह प्याले ही
भले हैं ।।

रीत प्रीत की सदा बनाये रखना
प्रेमी मिलन में जुदाई; सजाये
ढंग न्यारा है इस प्रेम नगर का
प्रेमी का मन सदा दुखाये रखना ।।

हास बिलास प्रेम रंग हो पास
फिर प्रेमी मिलन से रहा क्या पास
सब मिटा दु:ख ताप मन का
पर रहा क्या पास प्रीतम तेरें
दिल का ।।

मधुशाला में प्रीतम है क्या रखा
दिल ही पास है तो प्याला क्या
बला
जा चला जा मधुशाला है इक
दगा
हमारे दिलों में ही मधुशाला तूँ
बना ।।

ओ बाले तूँ क्यों न हमें सम्भाले
पी चुके हैं हम आसव के प्याले
अब पीकर कहाँ जायेंगे बालें
ज़रा सम्भाल ले प्रीतम को
बाले ।।

देर कर दी समय बीत चुका है
अन्धेरी रात बादल गरज रहे हैं
बिजली कड़क रही उधर जोर-2
अब तो खुद समझ लो क्यों हो
देर ।।

बहुत हुआ मत रुठो रानी
मस्त हुआ हूं पीकर बैठा हूं
तुम देखो तेरें ध्यान में रटन है
तभी तो देर इतनी कर दी ।।

ओ प्रीतम मत खेलो चालें
मैं खेल खेलना जानती हूं
अपनों को खूब जानती हूं
जो जाल में मछली फंसाते हैं ।।

प्रीत की रीत तो निराली है
जहाँ रुकते नहीं कभी मीत
यहाँ क्यों मन कहता रुक जा
तूंने पी रखी है यह प्रेम है झूठा ।।

पीकर जो प्रीत जताते हैं ।।
वे प्रेमी तो अपने हो नहीं सकते
जो याद में मस्त भूल जातें हैं
पीना
प्रेमी वही तो अपने हो सकतें हैं ।।

हटो वहीं मधुशाला में तुम
हमारें प्रीतम तो मन में ही रमें
तूँ क्यों बाला देखो, इन्तजार में
हम तो अपने घर में हैं भले ।।

वेला मिलन की आई

ओ सखी देख सावन घटा छाई
विछड़ साजन घर सुध लेंग आई
इधर जाग जाग रात यूँ बीती
जाई ॥
अपने साजन कब मिलेंगे आई ॥

यह बदली असमान में है छाई
विधना ने यह घड़ी आवन बताई
सखी देख अब साजन प्रदेशी नाहीं
व्यथा रोग मन दूर अठावन
आई ॥

बर्षा बर्षी भर गये नदी तालाव
मन मेरा भटक रहा है दिन रात
नींद कहाँ चैन कहाँ देखत मैं राही
अब तो बेला मिलन की है
आई ॥

बिजली चमक रही है अब यहाँ
ही
आसमान घटा है अब काली छाई
बिधना ने रंग न्यारे हैं अब बनाये
देखा किस वेग साजन मिलेंगे
आई ॥

उधर मोर नाच नाच मस्त हैं
धरती अब शान्त नज़र आती है
मन मचल मचल यूँ डोल रहा है
मानों साजन मिलने पास आ रहे
हैं ॥

मेध मलहार गात साज में गा लो
मस्त यूँ होकर झूम झूम नाचो
मंगल बेला आवन आज लगी है
साजन की बैठक सजा ले, देर
क्या हैं ॥

सावन मास बीता जा रहा है
साजन तो अभी दूर देश अड़ा है
यह नदिया जालिम क्यों भरी है
मेरे साजन को रोके क्यों अड़ी
है ॥

लिखा पत्र मिला था भी कल हीं
साजन आयेंगे घटा जब छायेगी
परदेश अब बसना भला नहीं
अब तो मिलन की बेला है यही ॥

बहुत हुआ मत रुठो रानी
मस्त हुआ हूं पीकर बैठा हूं
तुम देखो तेरें ध्यान में रटन है
तभी तो देर इतनी कर दी ।।

ओ प्रीतम मत खेलो चालें
मैं खेल खेलना जानती हूं
अपनों को खूब जानती हूं
जो जाल में मछली फंसाते हैं ।।

प्रीत की रीत तो निराली है
जहाँ रुकते नहीं कभी मीत
यहाँ क्यों मन कहता रुक जा
तूंने पी रखी है यह प्रेम है झूठा ।।

पीकर जो प्रीत जताते हैं ।।
वे प्रेमी तो अपने हो नहीं सकते
जो याद में मस्त भूल जातें हैं
पीना
प्रेमी वही तो अपने हो सकतें हैं ।।

हटो वहीं मधुशाला में तुम
हमारें प्रीतम तो मन में ही रमें
तूं क्यों बाला देखो, इन्तज़ार में
हम तो अपने घर में हैं भले ।।

बेला मिलन की आई

ओ सखी देख सावन घटा छाई
बिछड़ साजन घर सुध लेंग आई
इधर जाग जाग रात यूँ बीती
जाई ।।
अपने साजन कब मिलेंगे आई ।।

यह बदली असमान में है छाई
विधना ने यह घड़ी आवन बताई
सखी देख अब साजन प्रदेशी नाहीं
व्यथा रोग मन दूर अठावन
आई ।।

बर्षा बर्षी भर गये नदी तालाव
मन मेरा भटक रहा है दिन रात
नींद कहाँ चैन कहाँ देखत मैं राही
अब तो बेला मिलन की है
आई ।।

बिजली चमक रही है अब यहाँ
ही
आसमान घटा है अब काली छाई
बिधना ने रंग न्यारे हैं अब बनाये
देखा किस वेग साजन मिलेंगे
आई ।।

उधर मोर माच नाच मस्त हैं
धरती अब शान्त नज़र आती है
मन मचल मचल यूँ डोल रहा है
मानों साजन मिलने पास आ रहे
हैं ।।

मेध मलहार गात साज में गा लो
मस्त यूँ होकर झूम झूम नाचो
मंगल बेला आवन आज लगी है
साजन की बैठक सजा ले, देर
क्या हैं ।।

सावन मास बीता जा रहा है
साजन तो अभी दूर देश अड़ा है
यह नदिया जालिम क्यों भरी है
मेरे साजन को रोके क्यों अड़ी
है ।।

लिखा पत्र मिला था भी कल हीं
साजन आयेंगे घटा जब छायेगी
परदेश अब बसना भला नहीं
अब तो मिलन की बेला है यही ।।

देख सखी उठ जाकर देख
प्रीतम के आने की तरफ देख
बर्षा बरस देती रूलाई
दिल की व्यधा अब बढ़ आई ॥

उधर डाल पात में है हरयाली
मन मेरें छाई है दर्द की लाली
देख सखी वेला मिलन की आई
सुन आवाज कानों में बूटों की
आई ॥

यह देख उधर हुआ है शोर
ओर ओर क्यों बोल उठे हैं मोर
धरती पर दौड़ दौड़ चला है कौन
अब तो देर क्या मिलन वेला है ॥

सखी साजन भी तो लगाते रोग हैं
लिखकर पत्र पर कहते कुछ और
अब तो नयनों में नीर भी नहीं
जो रोकर रोग विरह हटा लूँ
मैं ॥

ये कान कुछ सुनते शोर हैं
मन मेरा दौड़ भरता है जोर की
जाई देखती कुछ है शोर और का
तम वेला मिलन की आई नहीं ॥

दूर देश सखी साजन वसे इस
मौसम ॥
मन यूँ समझे कहीं प्रेम रस लूटें
और सखी
भ्रम जाल में यूँ भटकी ज्यूँ मीन
जाल भटकी ॥
बेला मिलन की आई नहीं प्रीतम
भूल चले ॥

मीन बिचारी जाल फंसी फंसी देखे
पर वह प्रेमी जल भूले सुध बुध
मीन बिचारी ज्यूँ प्रेमी विछड़े मर
गई

यहीं हाल साजन मिलन बेला मेरी
होगी ॥

देख रैण इक आई अन्धेरी घटा
होर

साजन पहुंचे घर आँगन खड़ें हुए
ओ सखी देख साजन हैं पास खड़े
भीगे बस्त्र साजन मिले हैं पास
आई ॥

जीवन सुधा रस लूट

रसीले मानव जीवन रस लूट
भूल न तूँ जा अपने गौरव को
गा गा तूँ राम नाम रस गा ले
यहाँ धरा ही क्या अब समझ ले
वाँबले ।।

प्रात: हुई तूँ जुटा नित काज में
अन्ध काल यूँ बीता जंजाल में
शाम हुई तूँ सो गया थका खाट पे
व्यर्थं जन्म बना भूला तूँ राम से ।।

ओ मानव तेरा जीवन इक सपना
है
यहाँ आत्मा का बिश्राम है कुछ
काल का
तूँ मोह माया ज़ाल में फंसा बाँबले
यूँ व्यर्थ अपना आत्म बल खो
चला ।।

जीवन सुधा की इस बेला रस
लूट ले
अपने प्रभु से नित प्रीत की रीत
कर ले ।।

व्यर्थ धरा को यह तन बोझ मत
बना
यह तन आत्मा का बिश्राम घर है
देख ले ।।

जीवन सुधा की बेला रस लूट लें
माली इस बाग का ताक तेरी में है
कब तेरी तन बेली फूल फल
लगेंगे
पर तूं तो माली से भी दूर है
चला ।।

रहेगा यहाँ क्या सब मिट जायेगा
जीवन सुधा की बेली पर तूं कहाँ
ताक तेरी में यहाँ काल आ खड़ा
है ।।
तूँ कब प्रभु को अपने मन में
पायेगा ।।

है नहीं इस दुनियाँ में कोई सहारा
तरा ।।
केबल यह जाल, जाली, बुना जहान
का

देख सखी उठ जाकर देख
प्रीतम के आने की तरफ देख
बर्षा बरस देती रूलाई
दिल की व्यथा अब बढ़ आई ॥

उधर डाल पात में है हरयाली
मन मेरे छाई है दर्द की लाली
देख सखी बेला मिलन की आई
सुन आवाज कानों में बूटों की
आई ॥

यह देख उधर हुआ है शोर
ज़ोर ज़ोर क्यों बोल उठे हैं मोर
धरती पर दौड़ दौड़ चला है कौन
अब तो देर क्या मिलन वेला है ॥

सखी साजन भी तो लगाते रोग हैं
लिखकर पत्र पर कहते कुछ और
अव तो नयनों में नीर भी नहीं
जो रोकर रोग विरह हटा लूँ
मैं ॥

यैं कान कुछ सुनते शोर हैं
मन मेरा दौड़ भरता है ओर की
आई देखती कुछ है शोर और का
बस बेला मिलन की आई नहीं ॥

दूर देश सखी साजन वसे इस
मौसम ॥
मन यूँ समझे कहीं प्रेम रस लूटें
और सखी
भ्रम जाल मैं यूँ भटकी ज्यूँ मीन
जाल भटकी ॥
बेला मिलन की आई नहीं प्रीतम
भूल चले ॥

मीन बिचारी जाल फंसी फंसी देखे
पर वह प्रेमी जल भूले सुध बुध
मीन विचारी ज्यूँ प्रेमी विछड़े मर
गई
यहीं हाल साजन मिलन वेला मेरी
होगी ॥

देख रैण इक आई अन्धेरी घटा
होर
साजन पहुंचे घर आँगन खड़े हुए
ओ सखी देख साजन हैं पास खड़े
भीगे बस्त्र साजन मिले हैं पास
आई ॥

जीवन सुधा रस लूट

रसीले मानव जीवन रस लूट
भूल न तूँ जा अपने गौरव को
गा गा तूँ राम नाम रस गा ले
यहाँ धरा ही क्या अब समझ ले
वाँबले ॥

प्रात: हुई तूँ जुटा नित काज में
अन्ध काल यूँ बीता जंजाल में
शाम हुई तूँ सो गया थका खाट पे
व्यर्थ जन्म बना भूला तूँ राम से ॥

ओ मानव तेरा जीवन इक सपना
है
यहाँ आत्मा का बिश्राम है कुछ
काल का
तूँ मोह माया ज़ाल में फंसा बाँबले
यूँ व्यर्थ अपना आत्म बल खो
चला ॥

जीवन सुधा की इस बेला रस
लूट ले
अपने प्रभु से नित प्रीत की रीत
कर ले ॥

व्यर्थ धरा को यह तन बोझ मत
बना
यह तन आत्मा का बिश्राम घर है
देख ले ॥

जीवन सुधा की बेला रस लूट लें
माली इस बाग का ताक तेरी में है
कब तेरी तन बेली फूल फल
लगेंगे
पर तूँ तो माली से भी दूर है
चला ॥

रहेगा यहाँ क्या सब मिट जायेगा
जीवन सुधा की बेली पर तूँ कहाँ
ताक तेरी में यहाँ काल आ खड़ा
है ॥
तूँ कब प्रभु को अपने मन में
पायेगा ॥

है नहीं इस दुनियाँ में कोई सहारा
तरा ॥
केबल यह जाल, जाली, बुना जहान
का

कौन अपना कौन मित्र राम विन
यहाँ
तूँ जीवन सुधा में राम रस लूट
ले ।।

देखा रस लूट चले कवीर तुलसो
सूर

मिट्टी के तन मे आत्मा को अमर
कर चले
मीरा, नानक, बुद्ध ने लिया मीठा
रस लूठ
सीख ले प्रीत लगाना, मानव,
राम रस लूट ।।

कलम लिखती खरे बोल

रें कलम लिखती है
ओ उठो, जागो प्रातः काल
अव तुम जाकर करो काम काज
इधर दिन का सूरज चमका तेज है
तुम भी फैलाओ जग में यह
सन्देश ।।

रे कलम ने लिखे राज
गीत कलम के हैं स्वर ताल
जब वीर कर दिखाते हैं कमाल
देखा मातृभूमि की रखनी है लाज
तुम भी शूरवीर बन, करो महान
काज ।।

रें कलम का लिखा है
जन्म लेकर इक दिन मरना है
यहीं ढ़ंग जग में इक अजव का है
देखो फूल भी तो खिले हैं डाल-2
तुम भी जग में खिलो हंसते रहो
गले मिलो ।।

रें कलम के लिखे वे.[?]
जगा दिये भूले भटके इस जहान
दौड़े तुलसी शूर, नानक कलम ओर
तुम भी पकड़ो कलम करो यह
धर्म ।।

रें कलम के लिखे ज्ञान
मानव को दानव बनने से हटाया
ज्ञान ऋषि मुनियों का कलम ने
जताया
देखा वेद धर्म अटल विश्व धर्म
बना
तुम भी ज्ञान कलम का पढ़ना न
भूलना ।।

रे कलम लिखेगी
ओ मानव कलम कभी रुकती नहीं
तुम कलम को कम्जोर समझो
कभी नहीं

यहाँ कवि, साहित्यकार उपासक
है ही
तुम कलम के लिखे नित पढ़ो
लेख ।।

रे कलम देती सन्देश
ओ जहान वालो ज़रा खोलो पटल
है धरा पर रहा अब तक शष
तो समझो इक रहे कलम के लेख
तुम पढ़ो जग में फैलाओ उपदेश ।।

कौन अपना कौन मित्र राम विन
यहाँ
तूँ जीवन सुधा में राम रस लूट
ले ।।

देखा रस लूट चले कवीर तुलसो
सूर

मिट्टी के तन मे आत्मा को अमर
कर चले
मीरा, नानक, वूद्ध ने लिया मीठा
रस लुठ
सीख ले प्रीत लगाना, मानव,
राम रस लूट ।।

कलम लिखती खरे बोल

रें कलम लिखती है
ओ उठो, जागो प्रात: काल
अव तुम जाकर करो काम काज
इंधर दिन का सूरज चमका तेज है
तुम भी फैलाओ जग में यह
सन्देश ।।

रें कलम का लिखा है
जन्म लेकर इक दिन मरना है
यहीं ढ़म जग में इक अजव का है
देखो फूल भी तो खिले हैं डाल-2
तुम भी जग में खिलो हंसते रहो
गले मिलो ।।

रे कलम ने लिखे राज
गीत कलम के हैं स्वर ताल
जव वीर कर दिखाते हैं कमाल
देखा मातृभूमि की रखनी है लाज
तुम भी शूरवीर वन, करो महान
काज ।।

रैं कलम के लिखे बोल
जगा दिये भूले भटके इस जहान
दौड़े तुलसी शूर नानक कलम ओर
तुम भी पकड़ो कलम करो यह
धर्म ।।

रें कलम के लिखे ज्ञान
मानव को दानव बनने से हटाया
ज्ञान ऋषि मुनियों का कलम ने
जताया
देखा वेद धर्म अटल विश्व धर्म
बना
तुम भी ज्ञान कलम का पढ़ना न
भूलना ॥

रे कलम लिखेगी
ओ मानव कलम कभी रुकती नहीं
तुम कलम को कम्जोर समझों
कभी नहीं

यहाँ कवि, साहित्यकार उपासक
है ही
तुम कलम के लिखे नित पढ़ो
लेख ॥

रे कलम देती सन्देश
ओ जहान वालो ज़रा खोलो पटल
है धरा पर रहा अब तक शष
तो समझो इक रहे कलम के लेख
तुम पढ़ो जग में फैलाओ उपदेश ॥

चित चोर

रे सोये हो
जाग कर देख लो
यहाँ क्या है
इक दर्द भरी आवाज है
बेला भी तो शाम की है ।।

देख ले
कोई उधर कोस रहा है
कोयल भी तो मौन हुई ।।

दर्द भरी बेला है
सामने पेड़ पर मोर है
चित चोर भी यहाँ है ।।

अब तो रात भी काली है
चाँद तो आज यहाँ कहाँ है
आमावस का तो दिन है
इस बेला साजन ही होगा ।।

मन मेरा यह कहता है
दर्द का मारा कांपा होगा
मेरे लिए जलता होगा
पर अब तो खामोशी है ।।

धुपे उस झाड़ होंगे
चुपके से आते होंगे
मत बोल अब ज़रा
अभी तो आते होंगे ।।

दिद भी तो सावन के हैं
रात काली, घटा बादल की है
बिजली भी तो अब चमकेगी
ठीक हुआ साजन आते होंगे ।।

देख देख मुझे नीद कहां है
साजन अब तो आ गये
चोर चोर यूं कहते हो
यह तो प्रीतम अपने होंगे ।।

दो मिलन प्रेम के

मन मेरा गाता रहेगा
तुम आओ मधु मास में
यहाँ कुदरत हंसे गी
तुम नाचो इस राग में ।।

जाग जाओ देर क्या है
अव तो चाँद भी कहाँ है
रात की अन्धयारी शेष है
मिलन की वला पास है ।।

प्रभात में रात दिन मिले हैं
इस हास में मस्त भौरे उधर
गाते गीत हैं मधुर मिलन में
हर फूलों में खुशबु भी शेष है ।।

ओ रंग रँग में सजे फूल हैं
हर फूल में महक अलग है
देख कुदरत हम दंग ही हैं
फिर सूरज में तो चमक तेज है ।।

ओ तेज सूरज की धूप गरम है
विधना ने वदला ज़हान भी है
इधर उधर मिला सब साज है
ओ विधाता तेरा राज यहाँ अटल
हैं ।।

इधर देखो जो चढ़ा था सूरज
उधर देखो वह सूरज ढला है
आई शाम की अन्धयारी पास है
फिर मिलन प्रकाश तम में हुआ
है ।।

अब तो रात में तारे जड़ आकाश
हैं
चन्दा मामा भी चाँदनी देने लगा
है
रात विधना के रुप की रानी है
दो प्रेमी दिलों की अमर निशानी
हैं ।।

जो चढ़ा था अपने जोश में यहाँ
वह गिरा भी उसी मिलन में यहाँ
यूँ रात दिन का मिलन होता है
हर शुभा हर शाम प्रेमी मिलन
की है ।।

चित चोर

रे सोये हो
जाग कर देख लो
यहाँ क्या है
इक दर्द भरी आवाज है
बेला भी तो शाम की है ।।

देख ले
कोई उधर कोस रहा है
कोयल भी तो मौन हुई ।।

दर्द भरी बेला है
सामने पेड़ पर मोर है
चित चोर भी यहाँ है ।।

अब तो रात भी काली है
चाँद तो आज यहाँ कहाँ है
अमावस का तो दिन है
इस बेला साजन ही होगा ।।

मन मेरा यह कहता है
दर्द का मारा कांपा होगा
मेरे लिए जलता होगा
पर अब तो खामोशी है ।।

धुपे उस झाड़ होंगे
चुपके से आते होंगे
मत बोल अब ज़रा
अभी तो आते होंगे ।।

दिद भी तो सावन के हैं
रात काली, घटा बादल की है
बिजली भी तो अब चमकेगी
ठीक हुआ साजन आते होंगे ।।

देख देख मुझे नीद कहां है
साजन अब तो आ गये
चोर चोर यूँ कहते हो
यह तो प्रीतम अपने होंगे ।।

दो मिलन प्रेम के

मन मेरा गाता रहेगा
तुम आओ मधु मास में
यहाँ कुदरत हंसे गी
तुम नाचो इस राग में ।।

जाग जाओ देर क्या है
अव तो चाँद भी कहाँ है
रात की अन्धयारी शेष है
मिलन की वला पास है ।।

प्रभात में रात दिन मिले हैं
इस ह्रास में मस्त भौरे उधर
गाते गीत हैं मधुर मिलन में
हर फूलों में खुशबु भी शेष है ।।

ओ रंग रँग में सजे फूल हैं
हर फूल में महक अलग है
देख कुदरत हम दंग ही हैं
फिर सूरज में तो चमक तेज है ।।

ओ तेज सूरज की धूप गरम है
विधना ने वदला ज़हान भी है
इधर उधर मिला सब साज है
ओ विधाता तेरा राज यहाँ अटल
हैं ।।

इधर देखो जो चढ़ा था सूरज
उधर देखो वह सूरज ढला है
आई शाम की अन्धयारी पास है
फिर मिलन प्रकाश तम में हुआ
है ।।

अव तो रात में तारे जड़ आकाश
हैं
चन्दा मामा भी चाँदनी देने लगा
है
रात विधना के रुप की रानी है
दो प्रेमी दिलों की अमर निशानी
हैं ।।

जो चढ़ा था अपने जोश में यहाँ
वह गिरा भी उसी मिलन में यहाँ
यूँ रात दिन का मिलन होता है
हर शुभा हर शाम प्रेमी मिलन
की है ।।

रणवीर

रण भेरी बजी है
संग मेरी संगनी खड़ी है
कुछ श्रृँङ्गार किए खड़ी है
कुछ चाह मन में लिए है
पर मुझे अब कहाँ रहना है ॥

उधर राग नाच की झड़ी है
कुछ हास बिलास की घड़ी है
यहाँ तो मस्त जवानी खड़ी है
पर मुझे तो छोड़ दूर जाना है

रण भेरी वजी है
देख देख यहाँ बारात सजी है
ढोल बाजे की रंगत भली है
कुछ अपने पराये की याद है
पर मुझे तो सभी को छोड़ जाना
है ॥

रण भेरी वजी है
यह छोटे बाल गोपाल पास हैं
मांग इन्ह की भी तो शेष है
चाह मेरी इन्ह की मेरे ऊपर ही है
पर मुझे तो इन्हें भूल ही जाना है।

रण भेरी बजी है
दौड़ दौड़ दुश्मन पास है
मोर्चा अपना तूँ सम्भाल
मिट जा धरती माँ कहती है
यादें तेरी इस धरा पर हैं ॥

रण भेरी बजी है
ओ वीर तेरी यही पहिचान है
त्याग अपनों को, सुख भूल चला
मातृ भूमि के खातिर सब लुटा
चला
पर रोते रहे बाल सखा वर
पुकार पुकार ॥

रण भेरी वजी है
होंगे वीर सिपाही हम बाल भी
पथ वही हमारा होगा सदा
जिस पथ मिटे मातृ भूमि के रक्षक
तभी त्यागी वीरों से होगा
मिलन ॥

माली बाग में खड़ा

ओस पड़ी है
माली देख देख रोये
बाग की कलियाँ कहाँ
अब तो पत्ते भी झड़े हैं
सफेद रंग इधर जमा पड़ा है ।

इधर आया
देख ली दर्द भरी लता
ओ हाल वेहाल हुआ है
थे जो फूल खिलते यहाँ
आज पाला ही फूला है ॥

चिड़िया गाती नहीं
बला प्रभात की भी है
अब सूरज भी तो निकला
पर पाला भी तो सजा
ये दर्द व्यथा माली ढली नहीं ॥

बाग के कोने में
ऊधर गुलाब फूल खीला है
इधर कुछ है चहल पहल भी
कलियाँ कुछ हरी पत्तियाँ भी हैं
देख, माली, हँसा सूना नहीं बाग
है ॥

ओ देख ले
माली तेरा कभी अन्त नहीं
बीज रुप में तूं रहेगा ही
इक दिन बहार आएगी यहाँ
खिलेंगे फूल हर डाल पात यहाँ ॥

ओ दर्द भरा दिन हैं
पर तेरे बाग का क्या कहें
हर झाड़ झड़म पर नया ज़हान होगा
जो दर्द भरा समाँ हैं वह सुखमय
होगा ॥
तूं माली बाग में मस्त यूँ होगा ॥

एक जैसा कौन रहा
सुख दु:ख तो आते ज़हान में
फिर माली तूं क्यों गमगीन खड़ा
है
कल तेरा बाग फिर सजेगा यहाँ ही
गायेगी कोयल भी यहाँ मीठी-2 ॥

नीर भरी बदली

नीर भरी बदली
नील गगन भटक-भटक फिरे
पंछी यूँ डाल पात हैं भटके
ज्यूँ बिन जल मीन बिचारी
भटके ।।

नीर भरी बदली
देख देख जीव तुझे भटके
नदिया सूखी हुई डाल पात हानि
गरमी ने दी रुलाई ज्यूँ रोग व्यथा
छाई ।।

नीर भरी बदली
बिजली चमकी आँधी टपकी
दे गई बूँद भर भर तूँ पानी
धरती नदी तलाव भर गया
पानी ।।

नीर भरी बदली
धरा पर धर कर कदम भटके
सभी खग वृन्द अब हैं सबल जग के
तूँ बदली जग की धरा है बदली ।।

नीर भरी बदली
तेरी चाल है मस्ती गस्ती
तूँ बनी पर जग को जान दे चली
हंसे धरती गगन भी बना दीखे ।।

नीर भरी बदली
तेरा आना जग का पालन
तूँ आई अभी-गई अभी
जब तूँ हंसी तो हंसी जग बस्ती ।।

नीर भरी बदली
तेरा जग में नही कोई ठिकाना
तूँ सब के लिए तेरा घर न ठिकाना
विश्व जगती है तेरा घूम आना ।।

नीर भरी बदली
दु:ख दर्द भगाना इक तेरा काम
सर्वत्र भूखे की प्यास बुझाना तेरा
अरमान
तूँ सब की जग में कोई नहीं
बेगाना ।।

(43)

आईने में

आईने में नज़र है
चेहरा भी सामने नज़र है
हट पीछे देख यह तो साफ है
एक तूँ ही तो दिखता पास है ।।

आईने में नज़र है
कुछ आसमान भी तो साफ है
पर अन्धेरा पास है आईने तूँ किस काम है
यहां तो प्रकाश सामने हो तो काम तेरा हो ।।

आईने में नज़र है
पर अन्धेरा छाया पास है
कुछ आता नज़र नहीं है
क्यों आईने तूँ भी गुलाम है ।।

आईने में नज़र है
प्रभात का उजाला पास है
मुख नज़र भर देखता हूं
पर क्या आईने तूँ भी नकल है ।।

आईने में नज़र है
सूर्य का प्रकाश कुछ तेज है
नज़र भर देखता रहा मुख खोले
तूँ भी मुख खोलता करता उपहास है ।।

आईने में नज़र है
ओ मानव तूँ क्यों देखता आईना है
यह आईना तो सिखाता कुछ नहीं
यह तो केवल वेजान ही दीखता है ।।

आईने में नज़र है
कुछ लोग आईना लिए भटके हैं
पर यह तो रखता अपना क्या है
केवल नकल उतरना इसका गुण है ।।

आईने में नजर है
भटक भटक तुम मत नजर डालो
खोल ज्ञान पटल आईना तो मन है
इस आईने में झाँको यह मट मैला है ।।

एक सन्देस

रे सोये हो उठो
इधर आया है घर मैं
कुछ देखा नहीं
मैं सन्देश देने ही आया हूं

है क्या रहा यहां
अब तो प्रभात का सूरज चमका है
है मिटा अन्धेरा
इधर बसंत का मौसम भी है

मत देख मुझे
उठो खडे हो चलो बाहर देखें
आया है और कोई
राग छेड़ा उस डाल पंछी ने है

कहता क्या है
मत तुम गुटन में रहो अब यहां
रात अब कहां
दिन का करो तुम स्वागत यहां

बाग को देखो
खिले फल हर डाल डाल है
कलियां भी चूप हैं
खिलना इन्हें भी तो अगले कल है

इधर नदी वहती है
कहती तुम आगे चलते चलो
इधर हवा भी है
इस ठण्डक से मत तुम डरना कभी

ओ पहाड़ सफेद हैं
बर्फ है यहां सदा ही पड़ी हुई
तुम भारतीय हो
राम, कृष्ण, गन्धी, सुभाष भी तो थे

सह लो कष्ट सदा
शीत, पहाड़, हवा कहां देते सजा ।।
फूलों के संग कांटे है
साथी तुम कांटो में भी आगे बढ़ाना ।।

कांटों की सजा से
सदा ही फूलों का रस मिले गा तुम्हें ।।

निशानी वीरों की याद रखो

ओ देखो बड़ों का नाम मिटता नहीं
यूं छोड़ ये वीर निशानी अमर अतिम है
चलाये इन्ह के रिवाज मानते सभीजन
दूर दर्शीता की ये हैं पुरुष धनी
निशानी ।।

सुभाष ने दिया था नारा "जय हिन्द
का"
शास्त्री ने दिया था नारा जय जवान
जय किसान
टैगोर ने जन गण मन गीत गाया
जवाहर ने नहरों का जाल बिछाया ।।

गान्धी कह गये यूं हरिजन सब हरि के
वन्दे सभी हम सब उसी हरिजन के
मत यूं तुम भूलना इन्ह वीरों को
सदा याद रखो इन्ह के चलाये
उपकारों को ।।

जन्म सिद्ध अधिकार अजादी हमारा है
यही गीत वीर तिलक ने था यहां गाया
मर मिट देश आजाद करना भक्त
सिंह ने
सभी भारतीय जनों को है सदा
सिखाया ।।

छोड़ निशानी बड़े वीर जाते हैं सदा ही
विश्व जन सभी उस मार्ग पर चलते
रहते
भला कैसे नाम अमर हो न वीरों का
जब वे जन मन में नव परिवारी बनाते।

ओ देखा नहीं कमाल इन्ह वीरों का
आज भी गीत इन्हीं के गाते हम सभी
नई रौशनी विश्व को छोड़ गये हैं ये
नये मार्ग के पथप्रदर्शक बने हैं ये ।।

एक नारे में असर कितना होता है
यह तो इतिहास में आज लिखा पढ़ा है
इस आबाज को कहते करोड़ों जन थे
तभी तो आज सर उठायें हम रहते
हैं ।।

धन्य वह देश जहां वीर जन्मते हैं सदा
धन्य वह माता पिता जो ऐसे जन
जनते हैं।
धन्य यह भारत धरा जहां वीर पुरुष
हुये
तिलक, गान्धी, सुभाष भी यहाँ हुये ।।

भोर का तारा

जाग जा भोर हुई है
तारा वह भोर का ही है
अब छोड़ बिस्तर जाग जा
काज घर का करना है ॥

धरती की रुप भरी घटा देख
मोर गुन की आवाजें भी सुन
बसा है संसार जगती सारी जागी
ओ जाग जा देर अब नहीं करनी ।

उधर पक्षी भी तो बोल उठे
मूर्गा तो देर से बोल रहा है
ओ सोई हो क्यों, जाग जा
इधर भोर का तारा नज़र है ॥

नदीया किनारे नहा रहे बाल हैं
उधर उठाये लोटा जल पुजारी हैं
मन्दिर में धूम मच चुकी है
ओ मतवाली अब उठ जा जल्दी है ॥

देख माली मस्त घूम रहा है
फ़ूल खिले देख वह मस्त है
भौरे गूँज भर-भर गा रहे हैं
तूं उठ जा भोर का तारा देख ॥

भोर का तारा अब अस्त है
अब तो सूरज का राज है
अन्धेरा मिटा रजनी कहाँ है
प्रभात की बेला नहीं, दिन है ॥

इधर उठा किसान भी तो है
इधर देखो स्नान कर आये हैं
हरि नाम का जाप मन्त्र गूँजा
क्यों नींद भर सोई हो जाग जा ॥

आता यह तारा हर प्रभात है
ये देता सन्देश हमें यही है
मत तुम अन्धकार में पड़े रहो
जागो सूरज बन जग में चमको ॥

मेरे साजन का देश

मेरे साजन गये कब से विदेश
है नहीं आया उनका कोई सन्देश
देख-देख मेरी आँखें नहीं मानी
बिदेशी साजन सावन बन बरसी ।।

दूर देश में क्यों तेरा ठिकाना
नदिया पार क्यों तूँ बसा दिवाना
है कहाँ तेरा अब नया ठिकाना
क्यों रुठा है साजन तूं बन बिगाना ।।

उस देश के क्या रीति रिवाज
जो छोड़ अपने को भूले भेष
उस देश में नहीं साजन जाना
जहाँ लूट मार का हो सन्देह

अब तो व्यथा जाग गई है
इक टक देखती हूं राह तेरी
पर तुम छलिया बने हैं भारी
सुध बुध कहाँ रही हमारी ।।

मत तुम मुझे अब देखना यहाँ
मैं तो जल कर राख हूं यहाँ
बस यही नसीब है मेरे लिए
जुदाईयों में मरना मिटना यहाँ ।।

ओ मेरे साजन देश बिगाना है
उस देश तेरा नहीं ठिकाना है
अपने, पराये मत तूँ समझना
हमें तो अब इन्तज़ार में ही मरना है ।।

साजन का कुछ देश निराला है
वहाँ जो गया वापिस नहीं है आता
अब मैं तो छोड़ चली यह देश
प्रीतम के देश ही मन रमेगा ।।

कुछ साधन पास नहीं है
पर इक दिल तो साथ है
वह दिल तूं साजन, रखना पास
यही जुदाई में मेरा अन्तिम सलाम ।।

(46)

भोर का तारा

जाग जा भोर हुई है
तारा वह भोर का ही है
अब छोड़ बिस्तर जाग जा
काज घर का करना है ॥

उधर पक्षी भी तो बोल उठे
मुर्गा तो देर से बोल रहा है
ओ सोई हो क्यों, जाग जा
इधर भोर का तारा नज़र है ॥

देख माली मस्त घूम रहा है
फूल खिले देख वह मस्त है
भौरे गूंज भर-भर गा रहे हैं
तूं उठ जा भोर का तारा देख ॥

इधर उठा किसान भी तो है
इधर देखो स्नान कर आये हैं
हरि नाम का जाप मन्त्र गूंजा
क्यों नींद भर सोई हो जाग जा ॥

धरती की रुप भरी घटा देख
भोर गुल की आवाजें भी सुन
बसा है संसार जगती सारी जागी
ओ जाग जा देर अब नहीं करनी।

नदीया किनारे नहा रहे बाल हैं
उधर उठाये लोटा जल पुजारी हैं
मन्दिर में धूम मच चुकी है
ओ मतवाली अब उठ जा जल्दी है ॥

भोर का तारा अब अस्त है
अब तो सूरज का राज है
अन्धेरा मिटा रजनी कहाँ है
प्रभात की बेला नहीं, दिन है ॥

आता यह तारा हर प्रभात है
ये देता सन्देश हमें यही है
मत तुम अन्धकार में पड़े रहो
जागो सूरज बन जग में चमको ॥

मेरे साजन का देश

मेरे साजन गये कब से विदेश
है नहीं आया उनका कोई सन्देश
देख-देख मेरी आँखें नहीं मानी
बिदेशी साजन सावन बन बरसी ॥

दूर देश में क्यों तेरा ठिकाना
नदिया पार क्यों तूँ बसा दिवाना
है कहाँ तेरा अब नया ठिकाना
क्यों रुठा है साजन तूं बन
बिगाना ॥

उस देश के क्या रीति रिवाज
जो छोड़ अपने को भूले भेष
उस देश में नहीं साजन जाना
जहाँ लूट मार का हो सन्देह

अब तो व्यथा जाग गई है
इक टक देखती हूं राह तेरी
पर तुम छलिया बने हैं भारी
सुध बुध कहाँ रही हमारी ॥

मत तुम मुझे अब देखना यहाँ
मैं तो जल कर राख हूं यहाँ
बस यही नसीब है मेरे लिए
जुदाईयों में मरना मिटना यहाँ ॥

ओ मेरे साजन देश बिगाना है
उस देश तेरा नहीं ठिकाना है
अपने, पराये मत तूँ समझना
हमें तो अब इन्तज़ार में ही मरना
है ॥

साजन का कुछ देश निराला है
वहाँ जो गया वापिस नहीं है आता
अब मैं तो छोड़ चली यह देश
प्रीतम के देश ही मन रमेगा ॥

कुछ साधन पास नहीं है
पर इक दिल तो साथ है
वह दिल तूँ साजन, रखना पास
यही जुदाई में मेरा अन्तिम सलाम ॥

विवाह बन्धन

ओ दुनियाँ आवाद करने वालो
इस दुनियाँ को आवाद रखे चलो
विवाह की रीत है कुदरत की अपनी
इस पर तुम ठीक चलते ही चलो ।।

विवाह का बन्धन सुख जीवन है
इस का होना एक अनुशासन है
प्रेम बन्धन में बन्ध गृहस्त रचता है
फिर इसे क्यों कहते यह फंदा है ।।

विवाह का विधान स्वच्छ जीवन है
एक स्थिर मन कुछ सृजन होता है
मोक्ष धाम भी तो यही बन्धन है
एक मन हो सफर की मंजिल है ।।

ओ दो दिलों का मिलन यही है
सुख दु:ख के साथी दो दिल ही है
अपने पराये में भेद यहां नहीं है
वहीं गृहस्त के रंग ढगं सजे हैं ।।

देख लो समझ लो पीड़ा कहां है
विवाह के जुड़े बन्धन टूट कहां है
जहां दिलों के मेल होते कम है
अनुशासनहीन जहां दो दिल है ।।

विवाह के जुड़े दिल जहां हैं
स्वर्ग वह घर और गृहस्त है
सेवा भाव व्रत योग तप भी है
रहते देव सदा वहीं जहां प्रेम है ।।

एक भाषा एक आशा जहां रहे
एक रहन एक लग्न जहां रहे
विवाह बन्धन में बन्धे दो दिल रहे
समाज की सभ्यता का जीता
जीवन है ।।

यह बन्धन कोई खेल तमाशा नहीं
यह विवाह कोई रीति रिवाज नहीं
यह विवाह तो दो का मिलन है
प्रेम की सरिता में इक तपन है ।।

विहगं राग

ओ देख नजर भर देख ले
अपने विहगं राग को समझले
एक गीत विहगं ने है गाया
प्रभात का यह गीत समझले ।।

रात बीती प्रभात हुई अब
जगती में प्रकाश किरण टपकी
उधर काम काज हुआ जारी है
बिहगं राग अब भी जारी है ।।

उधर जागे सभी नर नारी हैं
बाल वृद्ध सभी अब ताजे हैं
रात तम अब कहां अब है
अब तो दिनकर का प्रकाश है ।।

बिहगं राग गा गया मधुर
तान इस की है अजब रगं ढमं
देखे जागते सभी जीवधारी हैं
सुनो इस की आवाज पुरानी है ।।

राग के स्वर थे इस के मधुर
तुम जाग जाओ अब नहीं रहा तम
बीत चुकी है अन्धेरी रात यहां
प्रभात की वेला है, शुभ है घडी ।।

उधर देखो भर रहे जल घट हैं
उधर आवाजे नदी नीर गान की
उठाये किसान हल लिये चले हैं
दो बैल भी तो साथ आगे हैं ।।

प्रभात बेला विहंग राग जमा है
नाच नाच माली भी सजा है
फूल खिले हर डाल डाल है
प्रेमी मिलन की अब बात नहीं
अब कहां है ।।

विहंग राग में प्रभात है हुई
तुम छोडो घर अब देर हुई
जुदाई में सब हुआ विगाना है
पर इस रात ने शाम होते आना है ।।

चढ़ते सूरज को नमस्कार करो
विहग राग के स्वर यूँ गूजें हैं
ढ़ल जायेगा जब दिन शाम में
तुम प्रीतम को फिर पाओगें ।।

जो आता इस दुनियां में है
एक वार उसे भी तो जाना है
मत भूलो तुम प्रीतम को यहां
शाम होते फिर उसे आना है ।।

यादें सदा मीठे राम की आती है
पर प्रीतम की यह धरती अपनी है
मत विहंग राग सुन रुठ जाना है
रातें तो सदा ही यहां आती है ।।

देश गान

ओ रूठ ने वाले रूठो मत
अव तुम सम्भालो अपना तन
गुज़रा समय कह रहा है तुम्हें
तुम मत भठको सम्भालो वतन ।।

याद कर लो वीते इतिहास को
याद कर लो शहीदों के त्याग को
क्यों भूल गये देश के अरमान को
होश सम्भालो मत वांटों देश को ।।

कौन पुकारता है आवाजें भरकर
कौन कहता है तुम उठाओ शस्त्र
अव तो आजाद देश आजाद हम हैं
यहां अब शहीदी जंग ही कहां है ।।

कुछ सजम कुछ जीना सीखो
मत देश के बटवारों में भटको
देश एक भारत हमारा ही है
यहां क्यों भाषा का अपवाद है ।।

ये धरती हमारी सजी भारतीय हैं
भेद भाव धर्म जात यहां नहीं हैं
सभी देव कृष्ण नानक राम हमारे है
हम सभी भारत मां के ही वेटे तो
हैं ।।

तीर्थ मन्दिर गुरद्धारे सभी के हैं
ये नदियां भी तो हमारी अपनी हैं
ये सागर से उठे बादल सभी के हैं
देखो हिमालय भी तो खड़ा देश
का है ।।

कौन पंजावी कौन गुजराती वंगाली है
हिन्द देश के हम सभी तो वासी है
ये नगर वड़े शहर सभी भारत के है
वसे करोडों जन भी तो भारतीय हैं ।।

भेद भाव की दीवार मत वनों
इस देश के वीर हो बहादुर वनो
मत अपनों पर वार तुम करते रहो
देश को अपना समझ आवाद रहो ।।

(51)

गणतन्त्र दिवस

आने वाले आ जा आज
देश भर छाया है प्रकाश
हैं जीते यहां के नर नारी
जो सदा सजाये नये साज ।।

गणतन्त्र दिवस मनाते हम हैं
देश हित कदम नये वढ़ाते हैं
लेते शफथ हर वर्ष इसी दिन
रहे भारत में यह परिपाटी नित ।।

देखें से हास विलास में
चलते से आगे नवाब से
पर करते काज अरमान के
याद रखते शहीदों के त्याग हीं ।।

मिलना मिलाना सीखा सिखाया
सभी को गले लगाना हमें बताया
बदले इतिहास की यादें ताजी रहे
यही तो गणतन्त्र दिवस ने याद कराया ।।

हक हमारे सदा सुरक्षित हैं
इस विशाल भारत के जन हम हैं
गाते गीत आजादी की याद के हैं
मिटाते ताप हम ही भारत वासी हैं ।।

क्या रखा भेद भाव में शेष क्या
क्या मिला देगें प्रसाद में शेष क्या
हम भारत के लोग एक आवाज है
इस भारत मां के हम सभी सपूत हैं ।।

देख लो आज हम सव साथ हैं
सुभाष जवाहर गान्धी का वह भारत है
मत भूलो देश के ये कारणधार हैं
तभी तो मिला हमें गणतन्त्र भारत है ।।

करो प्रण आज 26 जनवरी है
हटा दो आतंकवाद भी इस धरती
सीखो प्यार हेल मेल आज ही
मत भूलो हम सव है भारतीय ही ।।

शीशे का महल

रस राज मन भाता है
मनो कामना यूं कहती है
तुम खेलो हंसो बचपन में
बीता समय हाथ लगता नहीं ।।

आयेगी जवानी कुछ दिन ही
होगी सज-धज भी तन की
कुछ रहन सहन सजा होगा
अपनों का भी वो मज़ा होगा ।।

बनेंगें घर कुछ नये नये
लगेंगें शीशे अपने महल में
चहल-पहल भी तो होगी जारी
क्या कहूं अब सजा हुई भारी ।।

जुटे दिन रात पाने स्वर्ग राज
भूखे प्यासे वे रहें परखे काम
सुख चाहने वाले कष्ट में पड़ा है
दो दिन का बसेरा तेरा घर है ।।

धन कमाया लाग महल में
तन का जोड़ा भी वहीं मिटा
लूटा माल सभी इस महल में
पर बसना कहां नसीब सुख में ।।

सज-धज में यूं जवानी बीती
महलों की रौनक भी फीकी लगी
शीशे के महल, पर रोग लगे
सुख नींद कहां सोना अब मिले ।।

जो कमाया धन था वह खो दिया
शीशे का महल भी तो दागी हुआ
अपनों ने उसे कहां बनाये रखा
अब तो वह टुकड़ो में बंट गया ।।

कौन कहता जो बनाया सदा रहेगा
जो कल था राज महल बसाया
वह आज खण्डहर ही रह गया
यूं मानव तूं सुख खोज में
भरमाया ।।

पक्षी क्या कह गया

देख सुन बाले बाहर डाल पर
यह पक्षी सवेरे ही गाता रहता
आम की इस डाल पर हर रोज
आता
बोल यह पक्षी क्या-2 गा जाता ।।

सुनो मुझ वाला ने सुना राग पुराना
गा गया पक्षी अपना गीत पुराना
गाते रहे बाप दादा माता पिता भी
यही गीत गा गया यह पक्षी भी ।।

राग तर्ज वही है इस राग की
सब रागों में विहाग राग गाता है
उठो जागो करो अपना काज जारी
क्यों सोते हो अब प्रभात है भाई ।।

पक्षी गाता रहता मित इस डाल पर
मत भूलो अपनों के चलाये काम को
रीति रिवाजों में मत तुम भूल करो
अपनों को सदा तुम याद करो ।।

पक्षी जागा जागे सभी बाल बृद्ध
यही राग सुन जागे सभी जन
तुम जागो करो यही जन हित
अपनों का चलाये रखो स्वरध्वन ।।

पक्षी कहता प्रातः तुम करो धर्म
निज कर्म में जुटे रहो सारा दिन
परिपाटी बनाये रखो पूर्वजों की तुम
मत छोड़ों अपना प्रिय घर तुम ।।

कुदरत के नियमों पर चलो तुम
कुदरत को मत कभी भूलो तुम
आये हैं सभी जीवधारी इसी जग
बांटो प्यार सभी जीव उसके धन ।।

ओ पक्षी दे गया सन्देश सदा
मत हिंसा जीव की करो तुम
मीठी वाणी स्वर ताल भी मीठा
सारा जगत उस विधाता का अपना ।।

पत्ते का झड़ना

झड़ते देखे पत्ते भी हैं
समय पर ये पत्ते हरे थे
सुहाने सजे वृक्ष पर थे लगे
हरे भरे ये पत्ते थे लगे भले ।।

आई पतझड़ की रीत भी
झड़े पत्ते डाल से ही थे
कुछ पीले कुछ हरे भी थे
तकदीर में जीवन यही था ।।

आता जो इस दुनिया में है
इक दिन पत्तों की तरह झड़ेगा
सजधज तो क्या सड़ना पड़ेगा
रौंदें के हर कोई पैरों तले ही ।।

कितनी मतलब भरी दुनिया है
जो सुन्दरता पर गले लगाती है
पर अन्त काल उसे मिट्टी में मिलाती है
पत्ता तो खाद बनाता ही रहा है

ओ इन्सान तेरी जवानी देखी है
कल बुढ़ापा भी आयेगा ही
तुझे तेरे अपने ही कहेंगे यही
अच्छा होता मौत ले जाती अभी ।।

तेरे तन के साज ढीले होंगे
चलने फिरने के लाले होंगे
तूं चाहेगा सेवा भी अपनी
पर तेरे अपने कुछ निराले होंगे ।।

झड़ना और मिटकर देना कुछ
पत्तों ने ही रीत अपनी बनायी
तूं इन्सान क्या रीत बनायेगा
तूं तन को मिट्टी का ढेर बनायेगा ।।

मिटना और कुछ छोड़ना होगा
मरना भला वही भला होगा
जो बोझ बनकर जीते रहेंगें
भले वे पत्ते से कभी न होंगे ।

झड़ना और सदा मिटना सिखो
जन हित में सदा मिटना सीखो
पत्ते झड़े पर काम फिर हैं आये
यही मरना मिटना पत्तो ने बताये ।।

आँखों का काजल

लगा ले काजल आंखों में साजन
यह श्रृङ्गार का अंग है साजन
आंखें जग को दिखाती है साजन ।।
मत काजल से दूर हट साजन ।।

ओ आंखों के काजल में रमा है
मस्ती भरा इक मिलन ढला है
यह रंग काला पर जग भला है
मस्ती भरा यह मेरा अपना मन है ।।

काजल की कजली आंखें साजन
देख मुखड़ा आईने में साजन
रंग काला आंखें चमकी साजन
अजब ढंग इस काजल के साजन ।।

ओठों की लाली मस्त मतवाली
बिन्दीया की लाली सुहाग निशानी
काजल की कालिम प्रेम निशानी
ओ मस्त आली अब हुई मतवाली ।।

देख भौरा भ्रम जाल है अटका
अपने पराये की पहचान में भटका
रंग काली काजल पर साजन मस्त
देखा चमत्कार काले में भी सजावट ।।

लूट रहे हैं रस मधुशाला में
आंखो से प्रेम नीर है बहता
साजन तुम बिन यह अटका है
क्यों काजल में तू भटका है ।।

उधर रस लूटा फूल से तूने
कजली आंखों में क्या देखा तूने
इक प्रेम की प्यास जगी है मन में
तुम गाओ गीत इस मिलन में ।।

आंखों के काजल में भ्रम जाल है
आओ देखो साजन इस मन में है
यही निशानी प्रीतम की कहानी है
आयेंगे प्रीतम कजली आंखें निशानी है ।

वीरों की पहचान कर लो

मिटना और मिटाना कौन जाने
अपने घर की जो सार पहचाने
मिटे शहीद भगत सिंह ही थे
मिटामा पर तजंता का रोग था ।।

गरज भरते बीर जब इस धरा
मेघ फट जाते होता है सवेरा
बिजली की कड़क होती तभी जारी
बरसा वरसती छाती फिर हरियाली ।।

आते जब बीर पुरुष कांपती धरती
उड़ जाते सभी पक्षी भागते बन वारी
दहाड़ते ये शेर तब छाती अन्धयारी
देखे से होश गुम होते देखे दुराचारी ।।

करतब वीर अपना जताते हैं
तब क्या कर सके दुराचारी
इतिहास में नाम छप जाता है
मिटना मिटाना जाने ये पुजारी ।।

तुम खून दो मैं दूगां आजादी
कहना सुभाष का था अभी जारी
हजारों नौजवान यूं आगे बढ़े
मानों वीरों का खून खौलता था ।।

वीरों की आवाज पर गूंजते हैं नर नारी
गान्धी के नाम पर फाके काटते ये भारती
सत्यग्रह नाम पर विदेशी वस्त्र फूंक डाले
नंगे रहना मान लिया पर बिदेशी
हकूमत नाहीं ।।

महल छोड़ भागा अमीर भारतीय
सुख नींद छोडी, छोड़ी घर वारी
यूं जवाहर ने पाई जेहलों की ठोकरें
धन्य गान्धी तेरी विजय की कहानी ।।

यूं वीर जब चलते हैं आगे
जन समूह पीछे सारा उमड़ता
यही तो सदा अमर दान पाते हैं
सत्य ही वीर पुरुष कभी नहीं मरता ।।

बादल

बरसो बादल अब बरसो
धरणी तल पर आई बरसो
अब सावन आया बरसो
मोर मन भावन आई बरसो ।

धरा पुकारती अब बरसो
जरा देर कर दी है अब बरसो
निहारते किसान पुकारते बरसो
बादल तुम तरसाये बिन बरसो ।

नील गगन में आई बरसो
अपने रुप रंग में आई बरसो
थक गई आंखे अब बरसो
देख हमारे बेहाल पर बरसो ।

गमगीन धरा पुकारे बरसो
राजा रंक निहारते बरसो
कब से गए मेघा अब तुम आई बरसो
दादुर मोर आई है अब बरसो ।

नींद कहां जो तुम न बरसो
प्रीत कहां जो तुम न बरसो
धीरज कहां जो तुम न बरसो
अब सुख नहीं यहां जो तुम न बरसो ।

सुख की वेला बादल देता
हरियाली जीवन दान यह देता
नवगुण भण्डार बादल देता
शान्ति का ज्ञान बादल देता ।

कालें रंग के काले मेघा
चमके बिजली धमाके देता
धरणी तल हिलते देखा
मोर चकोर शोर शोर ।

आओ बादल बरसो बादल
वेला अब मंगल गायें
बजेगा बाजा चमक है भारी
ये नदियां नाले भरी-2 जाहीं ।

किसान उठा हल लिए जाये
सृष्टी में एक हरियाली लाये
हो तब नया सृजन तेरा
आओ राज तिलक चढ़ांयें तेरा ।

वसुधा नवनीत श्रृंगार करेगी
दुलहन बनकर सजी खड़ेगी
तूं सजा वन हारा मन भावन
पति तुल्य है धरणी साजन ।

देव दानव का पोषक
धरणी का मन भावन
निज नूतन नित रक्षक
आई बरसो तुम साजन ।

ये नदियां ये सागर पुकारे तुझे साजन
भेद नहीं कुछ तेरा ओ धरणीं नागर
अब बिरह अग्नि जल उठी है
दौड़े आओ हटा दो यह जलन।

शान्त—2 मन है तेरा
पर गर्जन पर तूँ है यमराज
तेरी सहेली चमकती जब गगन
तो दिल पिघल जाता है तेरा।

तूँ धर्म रक्षक गर्व गहरी
पर देता दया दान भारी
मौन सहती कष्ट धरणीं
पाप मेटनें आता धरणीं।

नींद

रात तुम कितनी भली हो
नींद तुम्हीं हमें देती हो
दिन की थकान नींद हरती
प्रातः ही ताजा जीवन देती।

अन्धेरी रात पर नींद तुम आती
पता नहीं तुम चुपके कैसे आती
स्वर मेरी जीभा को चुप करती
आंखें भी देख बिन रह जाती।

नींद तुम हमें नित देती नया जीवन
नींद तुम हरती मेरे जीवन का ताप
सदा नींद तुम्हीं आती हो मेरे पास
मैं लोट पोट हो जाता जब होती मेरे पास।

गहरी निद्रा जो आती है एक वार
पर हर रोज तुम आती हो कुछ देर
सारे जग में छा जाती खामोशी
मानों तेरा छाया है जादू यहां पास।

जीवन जगत सो जाती आली
कुदरती तब करती हास बिलास
सूना जहान तूं करती रात
मानों राज तेरा ही है इस जहान।

नींद तु सबकी देवी महान
चाहते तेरा प्रभात यहां सब जीव
तेरे आदेश की छाया है महान
पाते सब तेरे नूर का जहान ।

नींद तुम हमें नहीं आती जिस बार
हमें दर्द सी अन्धयारी मिलती पास
दिवस की चमक भी नहीं देती साथ
अंग सिथिल से नजर पड़ते हैं साथ ।

रोग भोग [में] तुम जाती दूर हो
शौक विरह में नहीं आती पास
हर दम सताती हो प्रेमी को
जो यादें करता तड़पे दिल के साथ ।

नींद तेरा जादू भरा हाथ है
नींद तुम जीवन दाता भी है
नींद हम चहाते तुझे हर रात
रात से तेरा पक्का ही नाता है ।

रात को ये घड़ियों तुझे ज्यादा प्यारी
रात के अन्धेरे में ज़्यादा तेरा वास
तूं सूने जहान की रानी मतवाली
प्रेम दिवानी दर्द अविनाशी जीवन दाता हो ।

नेता की भूख

तुम दरवार में सजे
बात करो ।
हर दरवारी से बात समझते
नजदीक में ।
हम दर्द को सजा है
प्यास मान की ।
दौड़ते घूमते चिराग हैं
पीते रस भरा गिलास
दौड़ दौड़ में ।।
भरते नहीं सांस नहीं
मिलते हैं आपस में
पर टकरान में
सच यही है
दौड़ दौड़ दौड़ ।।

विरह वेदना शान्त

देख रहे नजारा सजे
प्रेम है
बर्ष रहा जब ओलों का
मरते हुये खटमल
टूट रहे पत्ते, डालियां
नजर नहीं मच्छर
है धरा पर यहीं धरा
सोया पड़ा
अन्धकारी दानव ।
मौन है
सब कुछ पास क्यों है
ठण्डी गर्मी सांसों में
चलती हवा भी वेग में
शीतल तन फिर आंसु
बन रही है ।
शान्त शान्त शान्त

(63)

मेरे स्वप्नों का संसार

जहाँ मान, धर्म विजय निशान
जहाँ रहते ज्ञानवान इन्सान
धरती पर मानवता का विधान
सच पूछो तो यही है संसार।

रहना संसार में अपने साथियो
पर भ्रम जाल डुला यहाँ साथियो
कहीं पहाड़ दरिया और सागर
रोकन बैठे तुझे यहां आलम।

स्वप्न साकार यहां करते हैं
अपने पराये यहाँ समझते हैं
क्या भेद देना है अपना हमने
हमें तो कर्मवीर ही बनना है।

पथ हमारा बदलता रहेगा
कदम हमारे बढते रहेंगे हरघड़ी
पर समय तो गुजरता रहेगा
पर स्वप्नों का संसार कहां रहेगा।

इक समय ऐसा आयेगा
यहाँ प्रलय मच जायेगा
सब कुछ धरा रह जायेगा
स्वप्नों का संसार टूट जायेगा।

देख समझ ले माली
बाग तेरे में रह हरयाली
खिले फूल फल सदा यहां
पर मिटे न तेरी निशानी ।

हर विछोह इक रूलाई
पर संसार तो स्वप्न है भाई
मत इस पर ललचा तू जा
यह तो छोड़ना तूने भाई ।

जहाँ सुख की घड़ियां बीती
वहाँ दु:ख ने दी रूलाई
है संसार में दु:ख सुख
पर फिर भी जुदाई है भाई ।

जो हमने अपना समझा
वही छोड़ चला हमें
इक दिन हम भी जायेंगे
स्वप्नों का संसार अपना ।

भेद भाव की दीवारें तोड़ना
रंग रूप के स्वप्नों में घूमना
सब संसारी भेद हैं भाई
मौत सामने खड़ी है भाई ।

प्रेम कहाँ

ता देते मेरे महल वालो
ते हैं ।
ंपड़ियों में सोये पढ़े निदान
रते पेट हैं ।
लती धूप भी हैं यहाँ
ाटते खेत हैं ।
सल देते हैं कीट वे
ाते लोग हैं ।
ौर फिर सब को याद
पसीना निकलता
दया भरी आवाज़
पूछता हूं,
क्यों यह रोग शोक है ।
जब मानव है दानव
पीता लोहू जोश में
हंसते वे लोग हैं।
क्या यही है
प्रेम प्रेम प्रेम ।।

विष की मौत में

ुम सब शौकीन बने
बड़े हैं ।
ूड में मिला हुआ रूप
जलते हुये दिल
भरते बाहें नव युवक
नाचती हुई बालियां
गिरते हुए बांध
और यहां सब ओर
कूद पड़ता
विलासी मानव ।
समझता है ।
पर सोचता क्यों नहीं
इस लजीली चाल को
विष भरा प्याला धरा है
मौत में मज़ा है ।
शौक यही है
मौत मौत मौत ।।

बर्षा ऋतु

पाते पवन पालक पदक हैं।
ताल तालव तव तक है।
जब जाल जग जगा है।
करते काम काज कब है।
लाल लाली ललित लगी है
बाल चक्र चकित चली है
गगन गूंज गरज गई है।

घोर घटा घन घटित है
टाप टाप टपक टपकी है
फल फूल फटित फली है
धन्य धर्म ध्वजा धरी है।
मोर मोरनी मद माती है
नाग नागनी नाच नचाती है
दो दिल दिलगी दागते हैं
विधाता बाल वतन वासी है।

रात

रात का काला रंग
देता नया रंग।
सोता जगत है सारा
जब आता चन्द।
तारे गगन पर हैं
देती सजा अन्धयारी
विचरते है वनचारी
यह है रात की कलाकारी।
रात का मन नही काला

यह लाती मंगल वेला
रात ने दिया प्रभाती उजवाला।
चहक महक भी झलकीती
दूर भागती थकान भी
यह है गौरव भरा गान ही
रात का है नहीं मन काला।
मिलती है तब पूर्ण शान्ति
मत भूलो रात को साथी
यही तोड़े देती जागृति।

अधिकार

बाजू बाहर निकालो
सिर पर कफन बान्धो
हाथ खोल कर देखो
साँच पर आँच कहाँ ।।

लड़ाई हो जो लड़ाई
भेद भी हो भेद भरा
राजा पर रंक अधिकारी
पर कर्तव्य हो पूरा भाई ।।

धर्म पर धर्म समान हो
भेद भाव का न अंश हो
लेन देन का न भेद हो
फिर अधिकार क्यों न हो ।।

अधिकार जो छोड़ते हैं
वे भीरुता के रोडे हैं
सत्य के लिये अधिकार हो
कर्तव्य में अधिकार हो ।।

मिलता अधिकार जरुर है
पर दम में अगर दम हो
वीरों का कर्म कौशल प्रबल है
जो लेते अधिकार रण में ।।

अधिकार, भूमि पर बराबर समझो
अधिकार धर्म पर बराबर समझो
मिट जाओ सदा अधिकार पर
हस्ती बनती तभी है मानव की ।।

मानव मान महान तेरा
फिर दूर अज्ञान तेरा
जो जानता अधिकार लेना
वही जीवित है सदा घनेरा ।।

प्रेम की ज्वाला

मर मिटे प्रेम के दिवाने
कह गये इतिहास पुराने
ज्वाला प्रेम की जब जली
दो दिलों की आग जली ॥

फिल्मों में बात प्रेम की चले
दो दिलों की दिलगी हिले
हर साज आवाज में दिल मिले
यही आग शोला बनकर जले ॥

हर जगह दो दिल हैं मिले
जग में प्रेम ज्वाला जले
हर जन करे यह ताप सने
जीवन राज ज्वाला से बने ॥

देश धर्म जाति यह न जाने
भेद प्रेम में नहीं जाने
बस प्रेम में मस्त दिवाने
दिल की बात दिल जाने ॥

इन्तज़ार चाहे हो लम्बा
फाके फकीरी के हों फंदे
पर प्रेम छुपाये न छुपे
प्रेम की ज्वाला यूं जले ॥

जीवन में जीना इक कला
पर यह मस्ती प्रेम की ज्वाला
दूर रहे जो जन है भला
तो क्या जीवन सफल है भला

प्रेम के फंदे में बड़ी सजा
प्रेमी में तेज है इक वला
सत्य कर्म सत्य प्रेम भला
झुकते देव हैं, देख यह वला ॥

आग प्रेम की जहाँ जली
देश में आग वहाँ जली
भस्म हुए वहाँ कंटक सारे
याद दिलाते इतिहास पुराने ॥

योग साधे प्रेमीजन मिले
मौत भी हार माने चले
तेज जब प्रेम का जगे
सब रूकावटें दूर भागे ॥

आग प्रेम की जब तप न वने
भूख प्यास भी तन में न जगे
बिरह आग की ज्वाला भोजन बने
सत्य प्रेम के योगी सिद्ध पुरुष बने ॥

जिस तन यह ज्योति न सने
वह दिल नहीं समसान बने
रोग यह बिरह व्यथा जागे
शोक कहाँ इन्तजार जो रहे ॥

आग प्रेम की जहाँ जगे
सृजन नया वसुधा पर बने
विछड़े प्रेमी जब भी मिले
तपन हर में भगवान मिले ॥

भक्ति की ज्वाला

मीराँ की भक्ति, सन्तों की वाणी
भक्ति ज्वाला की अमर कहानी
धर्म वीर जब शक्ति पाते हैं
तब धरा हर भगवान आ जाते हैं ॥

सूर तुलसी ने यह आग जलाई
विश्व भर की धूम मची भाई
यह आग पार ब्रह्म परमात्मा ने जलाई
सत्य कहूँ दिव्य ज्योति धरा पर आई ॥

ज्ञान ज्वाला यूँ चमकी वसुधा आई
दौड़े सन्त जन भागवाँ चोला पाई
शब्द ब्रह्म की जननी यह ज्वाला भाई
तो देवता शिवगण दौड़ी-2 धूमा पाई ॥

सूर्य तेज पूंज यहाँ अटल भाई
यही तेज देता जीवन दान भाई
सभी को देता शव्द ज्ञान यहाँ भाई
समझो भक्ति मार्ग का मर्म यहाँ भाई ।।

शव्द ब्रह्म है ज्वाला है भाई
देश धर्म से ऊपर विश्व धर्म भाई
सत ज्ञान का शव्द सत वचन भाई
यही वाणी सन्तों ने है गाई ।।

आत्म ज्ञान की वीणा कृष्ण ने सुनाई
राम ने मर्यादा धर्म की माया गाई
दिव्य ज्ञान का मर्म ही तेज पुँज है भाई
भूख इसी से तन मन की मिटे भाई ।।

समझो तेज को अपना भाई
तेज विन शव्द कहाँ भाई
भक्ति ज्वाला मन में जगाओ
फिर मंगल मय जीवन पाओ ।।

हम सत्य प्रेम पथ पायेंगे
नाश्वर देह से मोह घटायेंगे
तन माटी है ज्योति अटल रहेगी
मन में भक्ति की ज्वाला जगाओ भक्ति जगती
रहेगी ।।

देश धर्म से दूर, प्रेम धर्म के पास
इक विश्व धर्म अटल है सदा पास
दिव्य चमक देता है यह पास
दूर न जाओ पास देखो प्रकाश ॥

मानव मानव में दया जगाओ
हटाओ अज्ञान का अन्धकार
सत वचन सत कर्म तुम निभाओ
यही ज्योति तुम यहां जगाओ ॥

फूल की कहानी

निराली कहानी बनी है
देख माली मालिन भी सयानी है
ये फूल खिले हर डाली-2 हैं
पर भौरे भी तो घूमे डाली-2 हैं ।।

प्रेम मिलन की कहानी है
माली मालिन संग-2 देती पानी है
हर डाल पर पत्तों की हरियाली है
फूल झड़े पर कल कलियाँ खिलेंगी ।।

देख यह कहानी पुरानी है
मालिन अपने बाग माली साथ है
देख बाग कितना भला सुन्दर है ।
खिली कलियाँ हंसी मालिन माली
पास है ।।

सुन ली कहानी माली ने
ओ संग-2 दे रही तूं पानी है
प्रिये मेरे तेरे प्रेम की छटा निराली है
हंसे फूल हम दोनों में क्यों भूल ।।

ओ मालिन सुन ले कहानी
बाग की यह चाल ढाल निराली है
हम दोनों की कथा गाती हर डाली है
तुम हंस लो यह जवानी पल भर की है ।।

ओ गा ले गीत याद कहानी है
थे हम भी कभी बाग के पौधे
माली ने दिया हमें मन भर पानी
आओ खिलें फूल की यही कहानी है ।।

एक स्वप्न साकार

रे गीत गा,
मधुर मिलन की वेला है।
उधर देख ले,
देर अब क्या सवेरा हो चला है।
मस्ती रही कहाँ,
हम सब घर वार छोड़ चले हैं।
दिन का काम यही है,
आना, जाना कुछ लेना-देना।
रात फिर आई है,
कुछ आराम में मधु रस झूमा।
पर समझ लें,
यह रात भी प्रभात में ढ़लती है।
क्या विश्वास करें,
यह मिलन भी एक उपहास है।
जो आता है,
एक दिन उसे जाना ही तो है।
यह संसार क्या हैं,
आना, जाना सुख-दुख सहना है।

फिर अन्धकार होता है,
यह संसार हमें छोड़ना ही तो है।
मत रहो उदास
हर दिन के बाद रात आवेगी।
जीवन में अन्धेरा है,
संसार को छोड़कर अन्धकार में
ढ़लना है।

कहते इसे अन्त है,
कुछ लोग कहते आप मरे जग प्रलय है।
यूँ आते रात दिन हैं,
यह रात अन्धेरी भी तो आयेगी ही।
हम यहाँ नहीं होंगे,
पर रात दिन की यह चाल रहेगी।
जीवन का भरोसा क्या,
आज दिन है कल रात का अन्धकार
होगा।
तुम व्यर्थ भटके हो,
यह संसार तो इक स्वप्न है।

**

(74).

देश चाहता क्या है

देश चाहता क्या है
मानव मानव से सहयोग
साथ चाहता है प्रेम
मिल जुल कमाना उद्योग ।

एक धर्म एक नारा हो हमारा
भेद अभेद का मिटे अन्धयारा
देश प्रेम का यहाँ हो उजाला
देश चाहता यही एक सुधरा ।

मिटे रैन अन्धयारी हमारी
हर कदम में इक चाह हमारी
मानव-मानव से प्रेम रहे भारी
देश चाहता है महानता हमारी ।

देश विदेश में बने गौरव अधिकारी
ज्ञान कुंज के बनें हम पुजारी
फिर देश में चले दस्तकारी
रहे न यहाँ कोई बेकारी ।

भीख माँगने की रहे ना बिमारी
देश में भेद न रहें
देश में जीवित रहें इमानदारी
देश चाहता है सद चरित्र हो अधिकारी ।

उंगली उठाये न कोई देश पर भाई
हो न अराजकता का राज भाई
हम रहें भारत में भारतीय भाई
देश चाहता है स्वच्छ कमाई भाई।

मिटे अज्ञान का अन्धकार यहाँ
हो स्वर्ण बिहाग भारत पर यहाँ
स्वर्ग तुल्य है बसा भारत यहां
हम है कुलीन भारतीय यहाँ।

देश आजाद हम भारतीय महान यहां
गौरव गाथा गाते गाँधी की यहां
कृष्ण गौतम राम की धरती है यहाँ
हम वीर बहादुर चाहते शन्ति यहाँ।

गरीब की कथा सदा हटे यहाँ
वीर पुरुषों की जननी भारत वसा यहाँ
मर मिटे वीर पुरुष सुभाष राणा यहां
हम चाहते देश की जन शान्ति प्रबल यहां।

वीरों की धरती गाँधी का धाम यहाँ
आजादी पर मर मिटे वीर जन यहाँ
फिर क्या गरीबी हटाओ कदम
से कदम मिलाओ देश चाहता यही।

गौरव गाया भारत माता

उदास न होना फूल झड़ जायेंगे
फिर कहां बैठेंगे क्या गोदी खाली रह जाएगी
मन्द-2 हवा हिलोरे लगायेगी
तुम तो दौड़े-2 खाली हाथ लौट जाओगे।

ये कलियाँ सन्देशा दे पायेगी
तुम अगले दिन सवेरें ही यहां आओ जी
जो खो दिया वह कहां पाओगे
भाग्य अपना तुम आगे ही जगाकर दिखाओ।

माता की गोदी अब खाली रहेगी नहीं
लाल उसका प्रदेश जाई ही कुछ कमाये
यह जग की रीति यही पाओगे
अपने विछोडे कर दिन ही नये पाओगी

जो रंग माता तुने निखारा
वहीं मां सपुत ने तेरी गोद में डाला
देश धर्म पर मिटना माटी
में मिलना।

माँ गोदी में तेरी बैठे-2 यही पाठ सीखा
गौरव गाया सदा तेरी याद रहेगी
भारत माता तूं सदा हरी
भरी रहेगी।

*

विश्व धर्म

राज दरबार में क्या होगा
देखो अपने घर का हाल
झगडे फगडे हैं ही रगडे
थोडे दिनों के ये झगडे ।

छोडो बात काम की करना
नित अपना ही काम करना
भेद भाव से तुम अवश्य डरना
नित सेवा भाव तुम करना ।

देश विदेश का भेद न करना
मानव जीवन में हक-2 हमारे
फिर एक ही माटी के सब पुतले
छोटे बड़े की बातें क्या करना ।

विश्व बन्धुता हो जाये जग माहीं
तो यह वसुधा स्वर्ग तुल्य हैं भाई
मानव मानव में भेद नहीं कोई
यह तो बनावटी रचना है भाई ।

राष्ट्र धर्म हक धर्म नहीं होगा तब भाई
विश्व धर्म में हम रंग जायेंगे तब भाई
प्रेम उजाला होगा तब वसुधा में भाई
यह समझो फिर मानव मानव है भाई ।

झगड़े रगड़े घर-2 तगड़े
जीवन भर मिटे नहीं रगड़ें
एक पर दूसरा हो जानी मानी
यह भेद भाव क्यों-रहे ओ जानी !

सफेद रंग है सूरत आती नजर यहां भली
एक व्रह्य एक धरती एक है हम साथी
भेद इतना न दिखाओ ओ ताजवालो
ये धरती एक की नहीं है ।

आये चले गए किसी को क्या मिला
यह नाशवान शरीर धरती में ही मिला
धरती के हम पुजारी यही माता हमारी
गोदी में पालती फिर रंग अपने में
सदा को हमें रंग जाती ।

धरती करे पुकार

धरती करे पुकार,
देश धर्म पर मिटना यार
नीति में लिखा यह अधिकार
है सागर भी लम्बा कुछ अडबनदार
पर समझ लो मर मिटने का अधिकार ॥

प्रेम पथ पर चलना यार
भीड़ पड़े तो आगे बढ़ना यार
कहीं लूट पाट हो कोई हानि भार
दौड़ लगाकर प्रेम पथ पर देना प्राण ॥

है धरती से करना प्यार तुम्हें मेरी जान
हर नर नारी जीव जहान इस धरती की जान
नदियाँ सरोवर सागर पर्वत बढ़ाते शान
बाग बगीचे सजे खेत और है खलियान ॥

है धरती में भरा खजाना भर पेट मिले खाना
कौन यहाँ रहे प्राणी जो खाये न भर पेट खाना
धरती माँ सब की माता देखती सदा समान
ओ सपूतो नत मस्तक तुम करो सदा इसे सलाम ॥

धरती के हम सभी वासी
इसी की मिट्टी में खेले पले हुये बड़े
फिर किये कुछ सृजन के भी काम
कुछ पाया कुछ खोया इस जहान
फिर माट्टी में ही तन छोड़ा गोदी तेरी में सोया ।।

प्यार तेरा धरती माता सब ने पाया
तूं अचर अमर पर है दो दिन
आये आज थे कल हम तूझे छोड़ चले
माता सपूत तेरे हम थे पर तुझे छोड़ चले ।।

धरती पुकारती रहेगी सदा
राम, कृष्ण, गान्धी, संत हुये जो ज्ञानी
तूं याद माता करती है वीरों की सदा
जो बोझ बनकर जीते रहे तेरी धरा सदा ।।
वे क्या रख पायेंगे, तेरा आदर मान सदा ।।

प्रभात की बेला

मत मस्त मगन रहो
बेला अब सोने की नहीं
भ्रम जाल मिटा दो साथी
अब प्रभात की बेला है ।।

इधर आवाजें भर रहे हैं
खग वृन्द अब जागे हैं
तुम अन्ध जाल में न रहो
अब प्रभात की बेला है ।।

उधर देखो आ गये भौरे हैं
मस्त फूल रस चूस रहे हैं
अपने प्रेमी देख फूल हंसे हैं
अब प्रभात की बेला है ।।

ओ जाग तू देख नाच
यह मोर मस्त हुआ है
नाच नाच यह थका नहीं
अब प्रभात की बेला है ।।

रात गई दिन का राज है
सभी नर नारी लगे काज में हैं
मत यूं तूं लेटा रह इस बार
अब प्रभात की बेला है ।।

ये नदियां रुकती नहीं हैं
समय इन्तजार करता नहीं है
मत तुम भूल अब करना
अब प्रभात की बेला है ।।

इधर जगत में चहल पहल है
तुम बन्द कमरे में खोये हो
जागो कुछ काम काज करना है
अब प्रभात की बेला है ।।

ओ देख समझ तूं कौन है
उस देव की तूं भी अंश है
ज़रा जाग उसका भजन करना है
अब प्रभात की बेला है ।।

बाग की कलियां

कलियो कल तुम्हें खिलना है
फूलों ने तो कल झड़ना ही है
सीख लो खिलना तुम फूलों से
हंसना हंसाना इन्ह फूलों से ।।

देख लो खिले फूल हर डाल पर
रग जमा है इस बाग के गुलाब पर
हंसना खिलना खिलाना सीख लो
कल तुम बाग के फूल बन जाना ।।

है धरा सजी महक फैली है
झड़े फूलों की धरा रंगीन है
देखो ये फूल भी तो मिटे हैं
सजाना और मिटाना सिखा गये

कल खिलेंगी कलियां इस डाल पर
महक अपनी रंगीनता भी सजेगी
परिपाटी फूलों की निभेगी ठीक ही
आज की कलियां कल फूलेंगी ही ।।

बाग का माली इस ताक है
ओ कलियो खिलो तुम भी यहां
मत डरना मिटने से तुम कभी
आया जी इस जहान है मिटेगा ही ।।

कलियां फूलों की पहचान है
फूलों से भरा बाग भी तो है
पर फूलों को तो झड़ना ही है
फूल बन कलियों का यौवन है ।।

कलियों यौवन के बाद बुढ़ापा है
तजना तुम्हें भी तो यह घर है
पर धरा को सजाया तुम जानो
मिटने मिटाने का यह ढंग पुराना है ।।

हंस लो खेल लो इस जहान में
आज की कलि कल फूल होगी
बाग माली का सदा सजा रहेगा
खिलने झड़ने का कर्म चलता रहेगा ।।

मेरे बाग की हमेली

मेरे बाग की हमेली सजी इस ओर है
जहाँ माली सींचता गुलावे फूल है
रहता यहां एक मर्द है
जो जागरुक है ॥

खाता वह यहाँ सादा भोजन है
मस्त रहता इस बाग है
पूछता सभी की दर्द है
जीवन का नशा है ॥

भमरों की रागनी जब गूंजती है
गुलावे फूल मस्ती दीखती है
मन का मीत रहता पास है
यहीं मन शान्त है
राही सच्चा है ॥

हवा मन्द मन्द चलती है
फूलों से गुलाल झरता है
तितलियाँ उड़ती हैं
मन मस्त है ॥

मेरें बाग की हमेली यही है
जहाँ प्रीत का नशा रहता है
मनचोर यहीं है
मानव यही है ॥

दर्द भरें गीत गाती कोयल है
दुखिया मन खोजता फिरा है
मेरे बाग की हमेली है
वहाँ रसिया है ॥

ढूंढते रहे बन में दूर कहीं
मेरे मन में बसा वह यहाँ है
मेरे बाग की हमेली में
उस का डेरा है ॥

मानव धर्म

जग भला नर भला कहां
मन भला पर जन भला कहां
मौन त्याग दे अपना जन भला
यूँ वृथा न कर जन्म यह भला ।।

आवाज लगी हैं संवाद चखले
भेद यहाँ धरा पर क्या धरा
मानव धर्म जगा है जरा समझले
मन अपना मना कर धर्म धर ले ।।

ये साज बाज ठाठ बाठ
नर का है झुठा अपवाद
ये लूट पाट फिर सांठ गांठ
है नहीं मानव तेरा ठाठ ।।

चित चोर हैं यहां सब चोर
सताते सभी माल पर हैं वे हाल
नींद भर सोना भी नहीं है कमाल
देखा भेद कितना है कमाल ।।

झगड़े पर झगड़ा फिर रगड़ा
मानत तेरा तो वही रगड़ा तगड़ा
भटका है मन इधर जात-पात का झगड़ा
लटके है जन इधर लूट पाट का रगड़ा ।।

अपना पराया क्या भेद पाया
सभी नर एक ब्रह्म रूप कहलाया
क्या देश विदेश इक धरा पर धरें
फिर नर नर से हैं क्यों डरे खडे ॥

भेद इतना भी नहीं जानों भाई
सभी मानव हैं उसी के भाई
जो देता जीवन और होता सहाई
मानव तूं मानव बन जा भाई ॥

ये साजे महाराजे नेता सह जाते
लड़ाते-2 मानव धर्म जताते,
भेद-भेद में कई नर मिट जाते
सच्चाई वो कहां व्यथा हम वहां पाते ॥

ये बन्धन धर्म अपधर्म नहीं है भाई
सचा जीवन सची कमाई मानव धर्म भाई
सब हम इक मिट्टी के बने इक धर्म हैं
वृथा जन्म अपना न जाने यहां भाई ॥

प्रेम को पहाड़ मत समझो मानव
यह तो मन वचन शरीर में है भाई
खेल उस जहान को मत समझो
यहां मानव धर्म एक ही है सहाई ॥

प्रभात बेला

जल जात तुम हो प्रिये
जग मौन मस्त देखता
क्यों सुन्दर हो
क्यों रोती हो ।।1।।

रूप कहानी लिखते रहे
दर्द दिल में हम भरते रहे
तुम लुटाती रुप हो
हम गुस्से में हैं ।।2।।

ज़हान वाले लुटेरे बने है
हर सुन्दर फुल पर मरते
तुम मिशा देवी
शान्त हो रहती ।।3।।

किसमत तेरी कोई बड़ी नहीं
रुप तो घड़ी दो घड़ी है
दिनकर राज है
तूँ छुप गई ।।4।।

भौरे गूँज भरते रहे
रस फुलों का चूस्ते रहे
यूँ प्रभात बेला में
प्रेमी मस्त रहे ।।5।।

ओ लुट पाट अब नहीं होगी
स्वामी बन सूरज आ गया
नज़र न लगा
कोप युक्त है ।।6।।

पराये पर मरना अपराध है
अपना धन अपना है
लुटेरे तो मरते
कुत्तों की मौत हैं ।।7।।

आन्धी

रण डंका बजने लगा है
उधर अन्धेरा छाने लगा है।
मौन हम है
तुम कहाँ हो ।।

आन्धी आने लगी है
घर कपाट सब मन्द हैं
कहाँ जायें
वे ठिका ठने हैं ।।

बट् वृक्ष ही सहारा है
दूर दराज कहाँ जाना है
अब देर नहीं
आन्धी आ धमकी ।।

ओ साथी आंचल कहाँ गया
नंगे सिर अब रहा न जाये
ये बाल विखर गये
आन्धी आ गई ।।

ओ देखो उड़ गई पतियां सारी
हम पेड़ तले देख रहे अन्धयारी
ये वृक्ष ठह गये
वट वृक्ष है भारी ।।

बड़ों की आड़ होती है सहाई
मत दिल तोड़ना यहाँ अन्धयारी
आन्धी देती सन्देश
तुम महान बनो ।।

डटे रहो वट वृक्ष तले
आ धमके जब आन्धी
बड़ों से मुकाबला
बड़े हैं करते ।।

मत भूलना बड़ों की छाया
ये गरीबों को देते सहारा
ज्यूँ आन्धी में रक्षक
बट् वृक्ष बना सहारा ।।

(८८)

मिलन में जुदाई खड़ी

रास में हास भरा है
मद मस्त रुप घरा है
लादे बाले प्याले भरे हैं
एक घूटं भर हम पी लें ।। 1 ।।

ये नदिया भी तो बह रही है
मस्ती भरी यह चली है
तूं क्यों यूं मौन खड़ी हो
ज़रा आंचल अपना खोल दो ।। 2 ।।

इधर मेघ गर्जन भी हुई जारी
ओ मदमस्त क्यों मौन हो
देख सामने बिजली चमक रही
अब देर यहां बाकी नहीं रही ।।3।।

देखो मिलन के ढंग न्यारे
अपने मस्त मौन हैं खड़े
यह मौसम का इन्तजार होगा
तभी तो ईतनी देर थे ये खड़े ।। 4 ।।

मिलन की घड़ियां कम होती है
हर मिलन में कुछ कमियाँ होती है
हर कमी का रंग निखरता उजला है
यही तो मिलन का ढंग अपना है ।। 5 ।।

यूँ रूप की सन्ध्या सामने थी खड़ी
कालिमा भी तो चाहिए भली
रात आने देते, क्या अभी पड़ी
मिलन में अब क्या रही देरी ॥ 6 ॥

यूँ बातें हास विलास में होती
दो दिलों की बातें कितनी भली
जीवन है इक मिलन की लड़ी
सुख की घड़ी वो है बीती चली ॥ 7 ॥

हास विलास ही तो सुख की लड़ी
फिर मिलन में क्या रही कड़ी
मत भूलो अपनों को यूँ हास में
मिलन की घड़ी में जुदाई है खड़ी ॥ 8 ॥

इक संदेश

राज पाट धन माल खजाना
इस धरा का भ्रम जाल पुराना
धरा पर धरा, धरा का खजाना
फिर इस माल का क्या ठिकाना ॥

इक मौत तो विश्व व्यापी भाई
धन खजाना किस काम का भाई
इक दिन ऐसा आएगा यहाँ भाई
माल धरा का धरा रह जाएगा भाई ॥

सोच-सोच कदम यहाँ धरना भाई
धरा पर अब बोझ न बनना भाई
लूट-पाट जोड़ जुड़ाई किस काम आई
जो प्रेम भरा इक संदेश न पढ़ा भाई ॥

देश धर्म में व्यस्त हो मेरे साथी
धर्म क्षेत्र यही है तेरा साथी
धर्म कर्म तप त्याग है इक साथी
नहीं जागा तेरे संग होर साथी

प्यार में तूँ हंस खेल ले भाई
इक दिन यह जवानी ढल जाएगी
रोक शोक फिर चिढ़ता आई
भस्म करेगी तेरी जीवन कमाई

याद तुझे कोई क्यों करेगा
तूँ तो भ्रम जाल में था पड़ा
मोह माया का झमेला था अड़ा
फिर साथ तेरे क्या जड़ा खड़ा

सच्चा धर्म सच्चा कर्म जग जानेगा
तब मानव पूजा जग करेगा
गौतम, राम, कृष्ण, गांधी सब जाने
सच्चे इन्सान को जग केवल पहचाने

रीत पुरानी जग जाने भले
पीर पराई जो सदा जाने भाई
देश प्रेम धर्म कर्म ऊंचा हो भाई
वह सदा जीता है इस जग माई

सन्देश इक यही है मेरा भाई
हंस खेल कर करो जीवन मापन
सचाई पर डट कर करो यहां लड़ाई
तब सदा अमर रहेगी तेरी कमाई ।।

(92)

बासन्ती बयार

जाग जाग मधु बसन्त मन भाया है
इधर बासन्ती बयार राब जन आपका है
ये हुआ क्या, यहाँ शोर गुलज़ारी
उठ जाग देख प्रभात की हरियाली ।।

मन्द मन्द समीर अभी हुई जारी है
इधर भूल में कामदेव की बारी है
पूछते क्या हो बेला मधुमास की है
सोये हो, देखो छटा कितनी निराली है ।।

उलझ उलझ भौरे मस्त इधर हैं
फूलों की हर डाल फूल यहाँ खिले हैं
क्या देखते हो, बासन्ती बयार निराली है
देख देख सब नर नारी मस्त मग्न हैं ।।

चमका चमका अब सूरज इस धरा है
नदी, सरोबर सभी में वह नाच पड़ा है
क्या हुआ मस्ती भरा अवसर आ खड़ा है
समझ लो बासन्ती बयार का यहाँ नशा है।

देख देख मन भावन कंत की छटा
हर डाल पात धरा का है सजा
ये हार श्रृंगार क्या, नव बधु बनी धरा
पँखा झोल रही बासन्ती बयार अपना ।।

पूछो पूछो ओ बासन्ती बयार से साजन
आई तुम किस देश विदेश से, देर थी क्यों
ये क्या किया जुल्म जो हम मरते रहे ठिठुर
सदा वहती क्यों न हो अपने साजन के घर

ठीक ठीक में जान गया तेरा अजब ढंग
तूँ बसन्त की बासन्ती बयार अपनी हो
क्या हुआ जो तूँ बसन्त की दिलदार हो
पर मिलन प्रीतम का वर्ष में एक बार ही क्यों

समझ समझ कुछ समझ में यूँ आया है
मिलन की घड़ियों का भी कुदरती समय है
क्या यही है कि तूँ उस कुदरत की सखा हो
ओ नियम निभाने सदा तुम इस धरा
आती हो

जाग जाग ओ मानव जाग होश में
मिलन के मधु मास में कुछ देख होश में
क्या सोचते हो कुदरत के ढंग अपने हैं
तुम भूल से मत भटकना सदा मधुमास में ॥

मेरे आंगन का अम्वुआ

डेरा लगा हुआ है, खग बृन्द हैं
डोल-डोल, डाली अम्वुआ सजा है
मेरे आंगन का यह पेड़ सजा है
घनी छाया धूप में पंखा लगा है ।।

फूकें भरती कभी-कभी कोयल है
कुछ पक्षी भी तो वोली बोलते हैं
छाया में सभी हम मौन सोये हैं
अम्वुआ की हर डाली सरगम गूंजा है

आया वरसाती मौसम पास है
झुक गई इस की डाली-डाली है
फल आम इस वृक्ष मन भाया है
देख बाल वृद्ध मन खिच लाया है ।।

हवा चलती जब इस पेड़ है
गिरते आम मचाते सभी शोर हैं
खग वृन्द अब नहीं यहां है
अव तो चाखन वाले हम तुम हैं ।।

कभी आते काक राज, काक भाषी
खाते फल आम की बैठ ऊंची डाली
उधर ये गिलहरी भी तो मस्त होती
खाती यह भी आम फल बड़े प्यार से ।।

इस अम्बुआ का सुख भोगते सभी
मेरे आँगन का अम्बुआ सजावट बनी
देव पूजा हो या हो अतिथि सत्कार
फल इस का चढ़ता सभी के दरबार ॥

राजा हो या रकं भिखारी
सभी को देता आनन्द हैं
आओ इस अम्बुआ तले बैठें
गाये गीत पुरषार्थ के बैठी ॥

मेरे आँगन का अम्बुआ सजावट मेरी
तन मन धन सर्वस्व यह मेरा बना
मत तुम मुख इस से कभी मोड़ना
आना, वसंत, गरमी, बरसाती मौसम ॥

बेला सोने की नहीं

उठो जागो वेला सोने की नहीं है
देश में चोरी घूसखोरी जारी है
माल महल सब जोड़े जुड़ते हैं
समय पर सब कुछ ही बनता है
आन्तक वाद, जातिवाद, धर्मवाद, अड़ा है
देश में गैरों का आन्तक जमा है
उठो जागो वेला सोने की नहीं है ।।

देश के अपने पराये वने हैं
देश धर्म कर्म से ये भूले हैं
भाई-भाई पर डाका फाका है
वहिन पर यहाँ हमला जानी है
उठो जागो वेला सोने की नहीं है ।।

बिके हैं यहाँ कुछ अपने ही
दुश्मनों से जुडे हैं यहां अपने ही
मारधाड ज़ारी है यहां अपनों की
समझ लो इन्ह घर के घसटोरों को
उठो जागो वेला सोने की नहीं है ।।

देश प्रगति के चरण पर वाधक
देश धर्म से दूर जो घातक
आज जन जीवन पर जो है आन्तक
जहां मन्दिर, मस्जिद, गुरद्वारे रण अखाडे
उठो जागो वेला सोने की नहीं है ।।

पूजा, जाप, पाठ हैं सब अधूरे
केवल लूट पाट मारधाड दिन दियाड़े
कहां सिख गुरु ब्रह्म ज्ञान की यहाँ
भाईचारा प्रेम धर्म तो यहां दिखावा
उठो जागो वेला सोने की नहीं ।।

ये भारत माता पुकारती है
तुम वीरों की मैं माता हूं
देख जुल्म क्यों सोये हो
जागो समय अभी बाकी है
उठो जागो वेला सोने की नही है

यहां भारत के सब वासी है
अस्सी करोड़ यहां निवासी है
दानवता को दूर हटाना है
मानवता को यहां ठहराना है
उठो जागो वेला सोने की नहीं है ।।

मोड़ मोड़ पर चोर

देख ले ढंग निराले हैं इन्सान के
बने तपस्वी पर चोर हैं जहान के

माथे तिलक धारे हाथ माला लिए
चला तपस्वी धोती धारण किये
हाथ का मन का मंत्र के साथ चलता
पर ध्यान कहां मंत्र का पेट भराई ही करता ।।

चरस भांग का जोर है भाई
अपनी कमाई बो यही है नित भाई
बोगी जोग भोगी रखते ध्यान मेरा
हर मोड़ पर है लगता मेरा डेरा ।।

देख लो ब्रह्मज्ञान का चमत्कार मेरा
भर पेट रोटी इन्ह माला के दामों में समेटी
बड़े हकीम मुन्सी फकीर की तकदीर हूँ
ये कुटिया के सन्त करते स्वागत नित मेरा ।।

कुछ लूटते माल हैं ये सन्त फकीर मेरा
पर आसरा तो मिलता है यहीं मुझे
दस बीस की पी जाते हैं कस भर कर
पर लाला हजारीमल को थोक बिकता ।।

चला है धन्धा मेरा बड़ा पुराना
बाप दादा ने कमाया यही खज़ाना
लाखों का धन्धा कहाँ दुकान माल
यही तो समझो अपना निराला धन्धा ।।

कभी कुल्लू कभी मनाली शिमला
से रेल कालका वाली बाम्बे
छलकता धर्म ज्ञाता मैं हूं पुजारी
बड़े सेठों का मैं हूं बिहारी ।।

हरिद्वार तीर्थों की भी यात्रा करता जाता
कभी मनी-महेश काश्मीर की सैर कर जाता
फिर द्वारका पुरी भी कदम धर पाता
सैर सपाटा हाथ की माला काम है, पुराना ।।

क्या तीर्थ क्या राज महल भाई
राजधानियों में अड्ड जमें हैं भाई
पर दुकान कहाँ जो माल रखा है
यही तो मेरा सब कुछ चमत्कार है ।।

यह पैन्ट वाला बाबू भी तो दोस्त है
मिलता यह भी मुझे हर मोड़ पर है
रखता हिसाब यह मेरा बेजोड़ है
मिलता कुछ धन इसे भी दमतोड़ है ।।

ये रुकावटें सरकारी मोड़ पर हैं
दस वीस की बात यहां भी तो क्या है
फिर पंण्डित और ब्रह्मज्ञाता भी तो क्या
नहीं है
राम नाम का जाप भी तो साथ है ॥

पकड़े कहाँ निशान नहीं मेरा
वन्दा नाम धरता नहीं है कहाँ स्थान मेरा
लूटना लूटाना तो इक धन्धा बना है मेरा
फिर दोस्तों की भरमार से चलता है धन्धा मेरा ॥

ये आश्रम फकीरों के नहीं भाई
जागीरे लगी रहती हमारी इन्हें भाई
धोती धारी पीले वस्त्र गले माला
माथे तिलक छाया कुछ धन्धा करते
निराला ॥

मदन के आने की पहचान

राज रजनी रंग है चढ़ा
माली बाग में है अड़ा
फूल कलियां स्वागत को खड़ी
देख कामदेव की है घड़ी ।।

मेघ गरजा बिजली चमकी
बरस मेघ धरती चमकी
साजन ने देखी तब सजनी
जाग-2 ओ मेरी धरनी ।।

रंग रुप दुल्हन का जानी
देख दौड़े आये बे जानी
धरती पर सजधज हरियाली
यही तो मिलन का समा आली ।।

बेला लूटन की है सजनी
हर फूल पर भंवरा है सजनी
रस लूट-2 वह गूँजता है
देख रुप तेरा रस चूमता है ।

ये खग खग सभी तो मग्न
देख अब कहीं आये हैं मदन
चाल ढाल सज-धज है यही
जब आते यहाँ हैं वे मदन

तूं क्यों सोई थी

बसन्त पूछता बासन्ती बयार से
ओ रानी आई क्यों देर से
मैं इन्तज़ार में था
तूँ क्यों सोई थी ।।

मैं मधु घोल चुका था
मस्ती भी तो छा गई थी
था इन्तज़ार में
तूँ क्यों सोई थी ।।

इधर धरती रुप निखारे सजी थी
प्रीतम कामदेव भी आया था
मैं अकेला ही था
तूँ क्यों सोई थी ।।

ओ हाल बेहाल हुआ जा रहा था
थोड़ा सफर लम्बा लगा था
में राही इन्तज़ार में था
तूँ क्यों सोई थी ।।

क्या तूँ कुदरत की सखा हो
मिलन भी तो बन्धा बन्धन है
मैं खोया खोया था
तूँ क्यों सोई थी ।।

ओ रानी बासन्ती बयार सुन
तूँ असूलों की जन्मा हो
असूलों में बन्धा प्रीतम जलता
तूँ क्यों सोई थी ।।

जग में रीत प्रीत की क्या यही है
मिलन की घड़ियां इतनी कम हैं
क्या इन्तज़ार में आनन्द है
तूँ क्यों सोई थी ।।

सूरज से पूछो

ओ सूरज की किरण छूती धरती है
आया वह इस बस्ती है
गाता गीत है ।।

पुराना वह मीत है
सेज प्रीतम की यहां है
आँचल में छुपा रुप है
देख ले, सुन ले ।।

भौरा पास ही तो है
पहली सूरज की किरण है
फूल पर वह मुग्ध है
रुप पर गूंज है
मधु है ।।

पर अब तो दिन है
क्या पास है
अन्धकार अब कहाँ है
मिलन का राग है
सोच लो ।।

प्रीतम अब उदास है
सूरज से पूछ लो
अब प्रभात है
अन्धकार दूर है
जग जगा ।।

अब विकास ही है
भेद ही पास है
नाता टूटा
प्रेम है ।।

चेतना

अर्द्ध निन्द्रा में मग्न क्यों
बिहाग, निशा चल बसी
रवि, किरण का आभास
सुखदा, वसुधा हंस चली ॥

पहाड़ श्वेत लालिमा अंक
कुछ शोर विहंग मचा
चहल पहल मांर्ग रंगें
फिर तूं क्यों यहाँ भलें ॥

जाग अब जाग जा
दिन भर काज कर

कर्म करना इक धर्म
लिखा शास्त्र का मर्म ॥
सूरज नित निभाता कर्म
कुदरत का रचा यह धर्म
छोड़ दो सरस जीवन
बढ़ो आगे जग का है धर्म ॥

रोना हंसना साथ रहे
भ्रम जाल भी सजा रहे
मानवता का विकास बढ़े
हर पड़ाव पर दिलदार चढ़े ॥

जेठ की दोपहरी धूप

ओ जेठ की दोपहरी धूप आओ
धन माल सब लूट तुम जाओ
पेड़ों खेतों में तुम छा जाओ
मन चली तुम अपनी कर जाओ ।।

मुरझाये डाल पात इस धूप में
सब नर-नारी भटके इस धूप में
त्राही-त्राही मची इस वसुधा तल में
सब जीव चर कहां रहे धूप में ।।

ओ देख उधर नव वधु है
इस धूप में पिया मिलन नहीं है
सूरज का प्रचण्ड कोप बढ़ा है
प्रीतम तो अब नज़र नहीं है

तुम प्रेमी जीवन को सताती हो
व्यथा विरह को भड़काती हो
तुम माघ की दोपहरी में रंग जाओ
मज़ा तेरे यौवन का हम ले पायें ।।

व्यर्थ तुम जलन में खड़ी हो
दो दिलों को क्यों जलाती हो
कुछ बदलो, तेज अपना बदलो
ओ जेठ की दोपहरी हमें गले लगालो ।।

रीत प्रीत की कहां अब जागेगी
इस तेज़ धूप में तुम जली हो
यह जलन भी तो इक जादू है
तूं निष्ठुर इतनी क्यों हो ।।

ओ इस निष्ठुरता में हम रुष्ट है
मिलन में यह विघ्न तभी तो है
तुम प्रेम पथ से दूर भटकी हो
तेरा प्रीतम अब कब आयेगा ।।

दिल की दिलेरीयाँ

दिलदार की बातें करते हैं
नित काम नये करते हैं
रह—रह जाते है
प्रेम का नशा है ।।

अरमान अपना मिटा जाते हैं
प्रेमिका के बस होते हैं
सभी भूल जाते हैं
प्रेम का नशा है ।।

बुद्धि बल अब कहाँ चलता है
श्री मति बल पर चलते हैं
मानों गुलाम बने हैं
प्रेम का नशा है ।।

खद दीन हीन बने चलते हैं
पर पीड़ा की चिन्ता नहीं है
नारी संग रहते हैं
प्रेम का नशा है ।।

महल अटारे अपने जरुर बनते है
रहन बसेरा भाई मात पिता का नहीं
केवल बच्चे बीबी रहते है
प्रेम का नशा है ।।

आत्म वल खोना हीन भावना है
नारी के इशारे जो नर चलते है
दिल में दिलेरियाँ है
प्रेम का नशा है ।।

सभी जोड़े ऐसे नहीं होते हैं
कुछ लोग मनचली बस पड़ते है
स्वर्ग, नरक बनाता है
प्रेम का नशा है ।।

जो मन मानी इस नशे नर नहीं करता
वह सुखी हो लम्बी उमर जीता
नर नारी संगी सदा हैं
प्रेम का नशा है ।।

दिल की दिलेरियाँ तो समझौता है
भाई बान्धव भी अपने हैं
फिर नारी क्यों ?
प्रेम का नशा है ।।

विरह जलन

व्यथा मन में जागती है
दर्द कहानी वह कहती है
विरह की आग जलन देती है ।।

रोती आंखें जल बरसाती हैं
वे मौसम बरसात आती है
विरह की आग जलन देती है ।।

प्रीतम जब पास आता है
बिरह आग शान्त होती है
विरह की आग जलन देती है ।।

मिलन की घड़ियाँ पास आती है
विरहणी में तब जान की आती है
विरह की आग जलन देती है ।।

यहीं व्यथा रोग बढ़ता है
यहीं मिलन में मिटता है
विरह की आग जलन देती है ।।

कलि सन्देश

हंसो हंसो ओ कलि अब हसो
इस डाल में तुम अब हंसो
कल तुझे भ्रमर प्यार से देखेगा
फिर रस तेरा पी वह मस्त होगा ।।

देख-देख माली मद मस्त होगा
तूं किसी देव के सिर चढ़गी
या तोड़ लेगा कोई तुझे प्यार में
अगर होगा भाग्य में तो सिर ताज होगी ।।

ओ आज तूं कली हो है
पर फूल बन तूं खिलेगी
इस डाल पर तूं सजेगी
तोड़े बिना भी तूं झड़ेगी ।।

इतना जीवन तेरे भाग्य में है
पत्ता नहीं तूं किस की बनेगी
रुप तेरे को देख कोई कहेगा
जीवन भर तूं हंसती रहेगी ।।

सिर ताज होगी या गले हार में
इक दिन तूं फिर भी झडेगी
बनना और मिटना तूं जानती
जन्म मरण है, अपने साथ ही ॥

विश्व जन को सन्देश तेरा है
जीवन थोड़ा है पर जीओ मान से
मिटना और बनना यहां भला है
आओ कलि को फूल में बदलना
सीखायें ॥

भ्रमर जाल में मानव तूं अड़ा है
पर जीवन कलि का तो पाया है
बनी आज कलि है कल फूल होगी
खिल फूल, बनकर चमकना है ॥

आओ सीख लो मिटना और मिटाना
आज की कली कल फूल होगी
हंस लो खेल लो इस धरा
सुखी, मस्ती भरा जीवन होगा ॥

※※

परीक्षा

ओ सफर के राही सफर देख ले
रंग में भंग यहां खड़ा है
हर कदम कुछ अड़ा है
भर रही आवाजें,
ओ मानव
परीक्षा ॥

ओ समझ ले परीक्षा हर कदम है साथी
कुदरत के हिंडोलें पर झूट ले
मौन-2 क्या हुआ यहाँ
चल रही हवायें
ओ मानव
परीक्षा ॥

ओ वीर की गौरव गाथा रण में है
माली भी तो फूल है देखता
कलियों पर कल से पहरा
बिजली है, घटा घन में
ख्याल श्याम
परीक्षा ॥

हर सफर कुछ रुकावटें अड़ी हैं
कटंको पास फूल भी तो है
मौन मौन क्यों रुके हो
अपने आईने में झांक लो
वर्षा का दौर
ओ मानव
दानवता ॥

यह परीक्षा ही तो मार्ग दर्शन है
भेद भाव यहाँ क्या है
सभी तो हम आदमी हैं
भेद में भेद है
ओ मानव भूल जा
अज्ञानता ॥

देखा परीक्षा कहती मौन में
मत मुडो इस यात्रा
यहाँ कटंको का राज है
ओ मानव दे जा
प्रवीणता ॥

साज बजने लगते हैं अब इस धरा
जान जाते हम सब भारतीय हैं
परीक्षा बिन क्या काम है
ओ मानव चल
देख ले, देख ले
उदारता ॥

दर्द भरा जीवन मेरा

दर्द भरा जीवन मेरा है
मौन मौन रहताहुँ
कुछ काम नहीं
केवल जीता हूं ॥

बरस रहा जल बादल से
सींच धरा को रहा है
कितना अच्छा जीवन है
कुछ काम बादल आता है ॥

पर हम तो बोझा बने हैं
दर्द भरा ज़ीवन है
केवल पेट भरते हैं
क्या जग को देते ॥

दर्द मन में जगती है
जब कोई दुखिया रोता है
पर निराश तब भी है
ज़ीवन तो कम है ॥

जीना भला है
हर कदम पर रोड़ा है
थोड़ा हम कमाते हैं
खर्चा ज्यादा है ।।
बोलो क्या भला करें
जीना हमें है
सचाई कहाँ रही हम में
हम तो धोखा देते हैं

दर्द सुन वे दर्द रहते हैं
क्या यही जीवन है
जहाँ भूखा पड़ोसी है
दर्द तो ये पशु भी भगाते हैं ।।
हम इन्सान, इन्सान को नहीं जानते
पर मन तो पवित्र है
बात भलाई की होती है
केवल कहते हैं
यही धोखा है ।।

धन्य मां भारती

हम उत्तारे तेरी आरती, धन्य माँ भारती ॥
तूं शस्याश्यामला, धवला भारती, धन्य माँ भारती ॥
गाते गीत तेरे हम भारती—धन्य माँ भारती ॥
रहते यहाँ सब धर्मो के भारती धन्य माँ भारती ॥
भरती फूक कोयल भी इस धरा भारती, धन्य माँ भारती ॥
देखा तेरा रुप रंग भेष वहु भान्ति भारती धन्य माँ भारती ॥
रचा था वेदों का सरगम वहीं भारती धन्य माँ भारती ॥
ज्ञान मान, धर्म दाता तू भारती धन्य माँ भारती ॥
वसे देव है इस धरा भारती धन्य माँ भारती ॥
नत मस्तक पूजते तुझे हम भारती धन्य माँ भारती ॥
छः ऋतुओं का सजा पालना भारती धन्य माँ भारती ॥
गौरव कथा तेरी सुनते विश्व जन भारती धन्य माँ भारती ॥
पूत तेरे हम हैं, हम हैं भारती, धन्य माँ भारती ॥

वीरों की निशानी

रण भेरी बज गई हैं
चारों दिशायें घेरी हैं
बादल बिजली यहाँ है
वीरों की यही निशानी रही है ।।

ध्यान मग्न जहाँ जन हैं
जंगल में मंगल रचे हैं
गूँज जहां धर्म की है
वीरों की यही निशानी रही है ।।

रास्ते पर निशान जो डालते हैं
सचे कर्म के जो उपासक हैं
आवाजें आ रही हमें जगाने की हैं
वीरों की यही निशानी रही है ।।

युद्धवीर, कर्मवीर, धर्मवीर यहीं है
मरना, त्याग, नव निर्माण काम है
शोर गुल जग में भी यही है
वीरों की यही निशानी रही है ।।

कथा वीरों की बल देती है
गीत वीरों के भरते जोश हैं
गीता ज्ञान भी तो वीरों का है
वीरों की यही निशानी रही है ।।

सचे प्रेम के राही बने यही हैं
जान पर खेलना जानते यही है
भीर पड़े तो दौड़े आते यहीं हैं
वीरों की यही निशानी रही है ।।

इतिहास वीरों ने बनाया है
गीत वीरों का सब ने गाया है
यादें वीरों की हमारे पास हैं
वीरो की यही निशानी रही है ।।

राम कृष्ण वीर थे यहीं हुये
राणा प्रताप, शिवाजी यहीं हुये
कौरव पांडव भी यहीं हुये
वीरों की यही निशानी रही है ।।

तुम खून दो मैं आजादी दूँगा
एक वीर ने जोश दिया था भर
दौड़े दौड़े आये वीर गूँज सुनकर
वीरों की यही निशानी रही है ।।

ओ राही मत भूलना निशानी
पथ पर यादें ताजा छोड़ चले
इस देश की आन बनाये रखना
वीरों की यही निशानी रही है ।।

दो बुन्दें

मेघ गर्जना हुई भारी
वर्षा पानी छाई हरियाली
गिरि पर पेड़ था भारी
दोनों ओर छलका पानी ॥

दो बून्दें बरसी इस पेड़ भाई
पर कहाँ नसीब अच्छे थे भाई
इक एक तरफ जा रही भाई
दूसरी ने दिशा और ही पाई ॥

वही पेड़ एक, एक थी टहनी
पर दो बून्दें नहीं साथ रहीं
जन्म साथ ही हुआ इस डाली
पर गिरि के दोनों ओर गया पानी ॥

एक ही मेघ एक ही पेड़ है
पर जन्म से ही लिखी जुदाई
नाले दोनों ओर थे भर पानी
नदियाँ भी दो थी भिन्न नामी ॥

रोने जोर से लगी बेचारी
हमारे भाग्य में क्यों जुदाई
एक वृक्ष से गिरी थी अभी
पर सदा ही यहाँ रही जुदाई ॥

कौन इस जग में रहा साथ सदा
कुछ पहले कुछ बाद जुदा होवे
प्रेमी प्रेम तो चाहता है सदा
पर जुदाई तो बनी संग है सदा ॥

दो बून्दें जल की देती सन्देश
ओ मानव जन्म पर मरण है
मिलन के बाद जुदाई होती है
मत तुम गमगीन रहना यहाँ ॥

जग में जन्म लेते साथ हैं
पर पता नहीं कब बिखरना है
यह जुदाई तो हर एक से है
यूं तो कुदरत भी देती साथ है ॥

मत जग में जुदाई से डरना
हर काज जुदाई पर करना
नाम तभी उज्वल लगेगा
जब कर्म पथ से न डिगेगा ॥

अन्त काल आत्मा मिलन है
सागर में नदियां जाती हैं सदा
बस उस सागर के पास मिलन है
अब बोलो कैसे हम जुदा हैं ॥

(114)

नदिया

इक नदिया निर्मल जल है
दो किनारे छलकता पानी,
देखी फूलों कीं घटा निराली
शीतल जल है
चंचल चाल ।।

देख-देख मन भटका है
नीला आकाश नील जल
सूरज भी तो झमका है
मौन जल हैं
चाल कम है ।।

ऊधर दो किनारे झड़े हैं
बृक्ष लता भी अड़े हैं
चट्टानें पत्थर कंकर टूटे हैं
सफेद झाग है
चाल तेज है ।।

मीन हीन कहां जल है
गहरे पानी बैठ अजगर है
करता शिकार अपना बह यहीं है
गम्भीर मन है
तूफान भी है ।।

नदिया तो इक नार है
बहते जल की धार है
सावन मन की छाया है
तन मन अपने में
मस्त हवा हैं ।।

मत तुम यूं मस्त रहना नार पर
कुछ थोड़ा समझ लेना किनारे पर
हृदय में बैठा काल भी है
जीवन थोड़ा है
हम मानव हैं ।।

प्रेम का नशा

रस भरी आवाज उधर से आती है
मौन मौन तुम रहती हो
क्या नींद खुली नहीं
अब तो प्रभात है ।।

ये परींदे आवाजें भर रहे हैं
चिडिया भी गा चली
जाग जाग जल्दी
देखो धूप है ।।

ओ मतवाली क्या आलसता है
बोलो थकी हो काम से
उठो बैठो जल्दी
तेरा बाल जगा ।।

रात लम्बी थी जरुर आज की
पर नींद भर सो पाई नहीं थी
वे अपने आये थे आज भी
बातों में सुला गये ।।

स्वप्न आया था इस प्रभात ही
मत तुम उठना आज जल्दी
नींद भर सोये रहना
उठायेंगे वे आ के ।।

नींद कहां थी यह घेर था
सखी, मन भेरे वे आये थे
पर सूरज आया
मैं उठी अभी ।।

प्रेम पीडा में दिन रात क्या
मद मस्त है नशा भरा
दिन का आना भला नहीं
समझा नींद भर सो लें ।।

रुप की देवी हो तुम

मस्त भ्रमर भटके रहते
पर जाल तेरा नहीं जाने
वह मस्त जवानी क्या जाने ॥

गाते गीत खग गण तेरा
मोर नाचते जब होता सवेरा
तूँ हंसती जाती देख सवेरा
पर तेरा भेद कौन जाने
हरि हरयाली कहाँ रही
अब जल कण मोती बने
हर जगह है चाँदी जडी
पर तेरा जादू कौन पहचाने ॥

अब सूरज प्रभात का निकला
किरण जाल इस धरा आ पड़ा
तब तूँ कहाँ चली जाती हो
यह भेद तूँ ही प्रभात जाने ॥

है भरते आवाज खग वृन्द भी
गाते गीत स्वर लय ताल में
जाग जाती जगती सारी सुन राग
मानो हो रहा हो स्वागत गान ॥
तूँ देवों की हो देवा
तूँ दिनकर की हो आभा
ओ देवी क्यों रुठी हो
यहाँ प्रभात आती है सदा ॥
रात का तम है टालती
ज्ञान भण्डार की दाता
मौन मौन सब दीखते
सत्य ही तूँ है जग गाता ॥

मुसाफिर

शौक शौक में जग छाना
तेरा एक नहीं यहाँ ठिकाना
भुखा प्यासा भटका राही
मजिल तेरी का अन्त नाहीं ।।

हर पडाव रुकता जाता
प्रीत की रीत सिखाता जाता
प्यार भरी बातें दो चार करता
सब के मन में बस तूं जाता

एक धोती कुदता साफा पहन चला
हाथ लठ पीट, गठड़ी पीठ लठ कोप
ज्ञान की माला गले लटकाये है
ओं मुसाफिर तेरा सफर लम्बा है ।।

भेद भाव नहीं तेरे मन मुसाफिर
तेरा सारा जग है अपना घर
रमण भ्रमण में मस्त मुसाफिर
मेर तेर से दूर है मुसाफिर

हर ग्राम नगर तूं रमा मुसाफिर
घर-2 डंका बजा तेरा मुसाफिर
रेल मोटर, साईकल नहीं साथी तेरे
तूं पैदल मार्च सदा करता चल ।।

पढ़ा लिखा तूं नज़र आता है
सभी बोलियों का ज्ञाता लगता है
क्या पंजाब, बंगाल कश्मीर है
तेरा सारा भारत इक देश है ।।

तीर्थ तेरे अपने घूमे फिरे हैं
नानक कबीर बुद्ध सा तूं है
प्यार कराना तेरा धर्म है
बिश्व बन्धुता का ज्योति सतम्भ हैं ।।

ओ बनो तुम मुसाफिर
इस जग को समझो घर
कौन हिन्द कौन सिख इसाई
सभी हैं मानव की सन्तान ।।

वनो मानव दानवता छोड़ो
देश प्रेम से आगे विश्व जन वनों
कौन है दुश्मन मानव मानव का
हम हैं मुसाफिर इस जग के ।।

जुदाई का आनन्द कैसा

रस रागनी रंग में झड़ने लगी
वीणा भी तो झूम-झूम वजने लगी
ताल तवले पर धम धमा लगी
ऊधर वांसुरी मधुर गान करने लगी ।।

अरि वेसवर, क्यों ऊधर ताकने लगी
मधुरे रंग राग में नहीं नाचने लगी
धीरज कहाँ अब सुन्दरी काँपने लगी
अब तो व्यथा विरह जाग-2 बढ़ने लगी ।।

मन में वह प्रीतम नजर आने लगा
झट से आंखों से नीर टपकने लगा
हाल वेहाल थी सुन्दरी झट गाने लगी
स्वर ताल लहरों में फिर बजने लगा ।।

इधर भौरे ने समझा फूल मुखड़े को
आ आ वह भी मुख चूमने लगा
भूला भटका वह गया उसी पास था
व्यथा रोग विहरणी होगा दो गुना था ।।

सुन, देख व्यथा रोग प्रेम में पला
यूँ वाक् युद्ध हुआ जारी गान में
यह देख सुन लोग मौन थे वेठे
यूँ राग में वह भी गा चली ।।

जो मजा है इन्तजार में सदा
वह कहाँ मिलता संग में सदा
होगा मिलन तब राग कहाँ
तुम रहना दूर यही तो है मजा ।।

ठीक कहते यहाँ ज्ञानी जन है
है मज़ा जुदाई में सदा
है [illegible] मजा मिलाई में
ओ दूर रहो आनन्द यही है ।।

भारत भू गान

तन मन धन अर्पण तुझे
भारत भू विश्व तीर्थ स्थली ।।
छह ऋतुओं का आगमन सदा
कभी वर्षा कभी बसंत भी सजा
शरदी गरमी फिर पतझड़ का मजा
रंगीन धरा रंगीन घटा यहाँ धरा ।।

नदियां ये पर्वत्तों, जंगलों की छटा
मैदानों में अन्न धन का भण्डार भरा
धरती पर हर जगह सोना ही सोना
विश्व व्यापी धर्मो की जननी तेरी धरा ।।

गोदी में तेरी खेलते जीवधारी
लूटते हैं मधु रस गोदी में पडे
फल फूल से सजी यह धरा
हर मौसम में देती नई अदा ।।

बोलियों हजारों सैंकड़ों भाषा में
बीसों धर्म हैं यहां आत्म ज्ञान देते
ज्ञान कला विज्ञान उद्योग यहाँ भरा
पुत्र हम हैं एक माँ के जने ।।

हर रंग रुप में हम बने
पहनावा भी अलग-अलग धरा
गाते गीत हम एक ही भाव के
चाहे भाषा बोली हो अलग 2 सी ।।

जो कश्मीर में रचा ग्रन्थ ज्ञान का
वही बंगाल में बना ग्रन्थ भाव का
पंजाब गुजरात, मध्यप्रदेश दिल्ली
बाम्बे सभी अलापते एक भाव को ।।

दूर हम दिल से कहाँ रहते
हिन्दू, सिख, इसाई, बौध सभी
मिल-—जुल कर काम करते
एक देव को ही हम आराधते ।।

गौरव गाथा हम वीरों की गाते
एक तिरंगे के नीचे हम जागते
जगते जागते हम वीरों को नित
वीर पुरुषों की गाथायें गा के ।।

विश्व बन्धुता साकार यही खड़ी
भारत माँ तेरी धरती बड़ी
गाथे हम नित गीत भारती
सभी मिल जुल कहलाते भारती ।।

मंहगाई क्यों

बढ़ती मंहगाई का हिसाव कर लो
अपनी कमाई पर ज़रा ध्यान कर लो ॥

आटे, दाल, चावल का इन्तजाम कर लो
तेल, नमक और मिर्च पर कन्ट्रोल कर लो
मसाले, खांड, घी, में कमाल कर दो
लकड़ी, कोयले, का कन्ट्रोल ही कर लो
बढ़ती मंहगाई का हिसाव कर लो

दूध, खोआ और मिठाई का दूर से ध्यान कर लो
सब्जी मेवा का नामो निशान मिटा दो
चाय पान और मद्य पान पर ध्यान कर लो
थोड़ा मस्ती में राग रंग का आनन्द कर लो ॥
बढ़ती मंहगाई का हिसाब कर लो

कपड़ा टैरालीन ही तुम हरदम पहनो
सूती कपड़े का तुम वायाकाट कर दो
वूट सूट का पूरा इन्तजाम कर लो
तेल कड़वा न हो तो पौडर क्रीम खरीद लो
बढ़ती मंहगाई का हिसाब कर लो

सिगरेट, बीड़ी, पान का अब काम है
ज़रा रुक रुक कर ध्यान कर लो
बुद्धि विकास में कमाल कर लो
ज़रा दो कस लगाकर हराम कर लो
बढ़ती मंहगाई का हिसाब कर लो

सैर सपाटा दौड़ धूप है बहुत भारी
काम काज में ध्यान होना दु:ख भारी
गुरु, माता-पिता करते उलट रटाई
छोड़ो घर बंगले, बिदेश में करें कमाई
बढ़ती मंहगाई का हिसाब कर लो

बच्चे बिचारे, बीबी रटे सूट बूट
खान पान नित नूतन तेल तलाई
दूध घी तो मंहगा पड़ता करता मैल मलाई
शरीर पुष्ट कहां अब तो औषधालय खुल जायें भारी
बढ़ती मंहगाई का हिसाव कर लो

मद अन्धता से हट जा भाई
विदेश की नकल न करना तुम अब
स्वदेशी रहन-सहन सीखना मत भूलो तुम
स्वावलम्वी बन कर जीना सीखो
बढ़ती मंहगाई का हिसाब कर लो
अपनी कमाई पर जरा ध्यान कर लो

बिजली चमकी क्यों

काले बादल में ज्वाला और प्रकाश
धमाके से दिल तोड़ यह आवाज
क्या यही देव तेरा सुख धाम
मौन खड़ा क्यों, अब दे जवाब
बिजली चमकी क्यों ।।

रात का यह काला भयानक रूप
फिर यह काला बादल भी इस रूप
क्या यही देव तेरा अपना स्वरूप
बोल, क्यों फिर बिजली कडकी
बिजली चमकी क्यों ।।

रीत तेरी देव बहुत पुरानी यही है
बादल में सदा बिज़ली का घर है
वर्षा से शान्त करता धरा को है
पर क्यों यह तेरा ठाठ बाठ है
बिजली चमकी क्यों ।।

हर जोश में ताकत नज़र आती है
गरजन में भी कुछ भावना होती है
डराना, धमकाना चाहता तूं सदा है
पर सब को सुखी बनाना चाहता है
बिजली चमकी क्यों ।।

काले बादल में बिजली रहती है
चमक-चमक जग को जगाती है
उठो ज़रा तेज हो जाओ तुम ज़रा
सब में प्रकाश, भलाई संदेश
बिजली चमकी क्यों ।।

अपने जो होते, होते हित चाहक हैं
डराते धमकाते बड़े जोर से हैं
पर दिल तो उदार भाव होते है
यही बादल तेरे उदार उद्‌गार हैं
बिजली चमकी क्यों ।।

दे रही सन्देश यह चमकती ज्वाला
ओ आदमी तूं समझ ले महानता
काले बादलों की चमक में है ज्वाला
नष्ट भ्रष्ट है दु:खद सभी आपदा
बिजली चमकी क्यों ।।

भारती कवीले

रुप की आभा क्या कहिए
जहाँ जग मग होती है ।।

रहते उस घर हैं
जहाँ भूखे नंगे रहते हैं ।।

दीन हीन का वसेरा है
दो दिन का जीवन है
हर प्रातः शुभा में ढ़लती है
रुप की आभा क्या कहिए
जहाँ जग मग होती है ।।

वसन तन पर फटा है
रोते वाल सखावर हैं
शिक्षा दीक्षा कहाँ है
यहाँ जीना पड़ा है
रुप की आभा क्या कहिए
जहाँ जग मग होती है ।।

देखें जीवन में सुख क्या है
वच्चे घर में पाँच सात हैं
कवीले में रहना जीवन है
यही सुख है
रुप की आभा क्या कहिए
जहाँ जग मग होती है ।।

तम्बू ताने फटे पुराने हैं
चिथड़ों में लिपटे रहते हैं
बेकारी लाचारी, हैं
कमाते क्यों हैं
रुप की आभा क्या कहिए
जहाँ जग मग होती है ।।

नित रोटी कमाते भीख से है
कुछ वचता नहीं हिसाव में
नशा कभी करते हैं
गमगीन रहना नहीं जानते
रुप की आभा क्या कहिए
जहाँ जग मग होती है ।।

पेट भराई केवल धन्धा
भर नींद ये सोते हैं
प्रातः से शाम भीख माँगते
फिर रात का विश्राम कर ले
यह एक जीवन है
रुप की आभा क्या कहिए
जहाँ जग मग होती है ।।

नारी

नारी तूँ नर संगनी हो
जादूगर तूँ हो
कौन जग में अभागा नर है
जो नारी ने न कसा होगा ।।

नारी सुख धाम सजाती
कभी क्रोध में दावा नल भडकाती
कौन समाज जहाँ नारी नही
बिन नारी रंगीनता कहाँ रहीं ।।

कहते कई विष प्यालो इसे
ज़हर भरी साँपनी इसे
पर यहाँ तो जग माता भी है
जगती वसी जब नारी है ।।

बोली फिर क्यों दागी है
जौंहरे नारी के गजब के हुए
मर्द बन मातृ भूमि पर मिटी
झाँसी वाली वह रानी मर्दानी थी ।।

मीराँ रटत निज भजन में थी
बोलो फिर कहाँ नारी पीछे थी
विष काली नारी वनी सभी
जब भोग वस्तु समझी गई ।।

निरादर हुआ जब नारी का यहाँ
तब नारी ज़हर भरी साँपमी बनी
नारी बिन जग सूना रहेगा
नारी लक्ष्मी रुप मानी गई ॥

महिला शव्द भी नारी मिला तुझे
ओ नारी तूँ ज्ञान दिव्य बनी हो
तूँ मर्द की सहचारी सदा रहती हो
जग कर्त्ता जग हरता डर हो है ॥

तेरा स्थल कहाँ खाली है
तूँ इस धरा की पालक है
माता स्त्री, वहिन बनी जग में है
फिर तेरा सब जग अपना हैं ॥

भारत बन्दना

ओम ओम मंत्र गूंजा
ज्ञान पुंज यहाँ चमका
ध्यान मगन थे हम जन
तेरे चरणों तले सागर है
धोता नित तेरे चरण

सिर चाँद मुकटे सजा
हिम पहाड़ हिमालय चला
देख जन मन भूला
हम उतारे तेरी आरती ।।

गंग नीर छः ऋतुओं की समीर
जननी तूं बहु रंग है ढ़ली
खेल रही कुदरत यहाँ अरि
सजी है तेरी अपनी रंग स्थली

देख देख दुर्जन होर
भेष में हम सब न्योर
पर अब्ल धर्म डाक है
तूं जननी हम सब की है ।।

गाते गीत विहगं तेरे
प्रभात वेला हैं नहीं सितारे
उजड़ी बस्ती कहाँ यहाँ है
रात की बेला अब नहीं

ओ माता हम बाल तेरे
गीत तेरे गाये सदा
मिटे न तेरी वस्ती सदा
तभी होगी शक्ति हमें सदा

दे दे वरदान ओ माता
ज्ञान भण्डार बढ़े हमारा
विश्व उतारे हमारी आरती
हम गाते रहें तेरी आरती ।।

I. I. A. S. LIBRARY

Acc. No.

This book was issued from the library on the date last stamped. It is due back within one month of its date of issue, if not recalled earlier.

मुद्रक:- अजय प्रिन्टर्ज़, सरकाघाट

किशोर ज्योति

निवेदन

यह किशोर ज्योति काव्य रचना सौ कविताओं के रुप में स्व-रचित रचना है। यह संस्करण मैं अपने स्वर्गीय परम पूज्य पिता प० प्रभु राम जी की यादगार में प्रकाशित कर रहा हूं। इस काव्य रचना में प्रकृति वर्णन, देश प्रेम, विश्व बन्धुता और भक्ति भावना सम्बन्धी कवितायें लिखीं गई हैं। हर एक कविता में एक भावना व शिक्षा अवश्य विद्यामान हैं। कवितायें स्वछन्द रुप में लिखी गई हैं अलंकार और छन्द कविताओं में कम बन्धे हैं। लय ताल स्वतः ही बन पड़ा है। यह कवितायें स्वतन्त्र रुप से नवीनता में झलकती नज़र आ रहीं हैं जैसा वाणी में शब्द और वाक्य लय, ताल में गुंज पड़ा वह लिख डाला है। विद्वान साहित्यकारों की कसौटी पर कैसी यह कवितायें उभरेंगी इस का निर्णय अध्ययन करने पर ही लग सकेगा। पाठ[illegible] काफी प्रयास के उपरान्त भी कमी रह गई [illegible] जायेगा। मुझे त्रुटियों के प्रति अवश्य [illegible] के अधीन है। मुद्रक के अथक परिश्रम क[illegible] लिये मैं अजय प्रिंटर्ज, सरकाघाट को [illegible]

Library IIAS, Shimla
H 811.8 Sh 23 K
G1261

निवेदक व लेखक :—

किशोरीलाल शर्मा (गर्ग गोत्री)

भाषा अध्यापक
गवर्नमैन्ट हाई स्कूल, भाम्बला

सपुत्र प्रभु राम शर्मा, ग्राम मठ,
डाक खाना बलद्वाड़ा

जिला मण्डी (हि. प्र.)